CMYK

RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजर आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर

श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज

श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं.पू.1008 श्री रामानन्द जी

तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत

वर्ष-9 अंक: 297 ता. 06 मई 2021, गुरूवार, कार्यालय :114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

दक्षिण भारत में तेजी से फैल रहा कोरोना का डबल म्यूटेंट, एन440 के वैरिएंट को भी छोड़ा पीछे

नई दिल्ली। दक्षिण भारत के राज्यों में कोरोना वायरस का डबल म्यूटेंट वैरिएंट (बी.1.617) तेजी से फैल रहा है। इससे पहले दक्षिण भारत में कोरोना वायरस का एन440के वैरिएंट चिंता का कारण बना हुआ थआ। कोशिका एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र (सीसीएमबी) के विज्ञानियों के मुताबिक डबल म्यूटेंट का प्रसार एन440के वैरिएंट से भी तेजी से हो रहा है। सीसीएमबी के पूर्व निदेशक राकेश मिश्र ने कहा कि कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के बाद अब तेलंगाना में भी डबल म्यूटेंट का प्रभाव ज्यादा हो गया है। इस साल के शुरू में सीसीएमबी ने पांच हजार वैरिएंट का विस्तार से विश्लेषण किया था। इसमें पाया गया था कि कोरोना वायरस के अन्य वैरिएंट की तुलना में एन440के वैरिएंट दक्षिण भारत में बहुत तेजी से फैल रहा है। सीसीएमबी के विज्ञानी दिव्य तेज सोवपति ने कहा कि डबल म्यूटेंट उपरोक्त राज्यों के साथ ही केरल में भी एन440के वैरिएंट को पीछे छोड़ रहा है। सोवपति ने कहा कि कोरोना की पहली लहर के दौरान दक्षिण भारत में एन440के वैरिएंट चिंता का कारण बना था, लेकिन दूसरी लहर में डबल म्यूटेंट जैसे बी.1.617 और बी 117 तेजी से इसकी जगह ले रहा है, यानी ज्यादा मरीजों में डबल म्यूटेंट का संक्रमण ही पाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि केरल को लेकर ज्यादा आंकड़े तो सामने नहीं आए हैं, लेकिन जो भी थोड़े आंकड़े मिले हैं, उससे पता चलता है कि राज्य में बी 117 तेजी से फैल रहा है। डबल म्यूटेंट यानी बी.1.617 में तीन नए स्पाइक प्रोटीन म्यूटेशन हुए हैं। सोवपति के मुताबिक मार्च की तुलना में डबल म्यूटेंट का प्रसार फरवरी में तेजी से हुआ। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र के निदेशक सुजीत सिंह ने पिछले महीने एक वेबिनार में बताया था कि महाराष्ट्र के कई शहरों में 50 फीसद से ज्यादा नमूनों में डबल म्यूटेंट वैरिएंट पाया गया था, जबकि मार्च के दूसरे हफ्ते में 28 फीसद नमूनों में ब्रिटेन में मिला वैरिएंट पाया गया था।

कोरोना से बढ़ती मौतों को लेकर लॉकडाउन का बढ़ा दबाव, क्या करेगी मोदी सरकार ?

नई दिल्ली। दो हफ्ते पहले ही पीएम मोदी ने राज्यों को यह सलाह दी थी कि वे लॉकडाउन को आखिरी विकल्प मानकर चलें। हालांकि, अब कोरोना वायरस की वजह से देश में हर तरफ कोहराम मचा हुआ है। कोरोना मरीजों से भरे अस्पताल और हर दिन बढ़ते मौतों के आंकड़े की वजह से केंद्र सरकार पर लॉकडाउन लगाए जाने का दबाव बढ़ता जा रहा है। स्थिति यह है कि देश के ही नहीं बल्कि विदेश के नेता भी कोरोना संकट से उबरने के लिए भारत में लॉकडाउन को ही आखिरी विकल्प बता रहे हैं। यहां तक कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के चीफ मेडिकल अडवाइजर ने भी भारत को लॉकडाउन लगाने की सलाह दी है।

सिर्फ लॉकडाउन से होगा अर्थव्यवस्था को नुकसान?

कैलिफॉर्निया के स्टेफोर्ड मेडीसिन में संक्रामक रोगों की विशेषज्ञ कैथरीन ब्लिश का कहना है कि सबसे बड़ी समस्या यह झूठा नैरेटिव है कि सिर्फ फुल लॉकडाउन से अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचेगा। उनका कहना है कि अगर आपकी एक बड़ी आबादी बीमार है तो यह भी आपकी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा नहीं है।

क्या कहा अमेरिका के शीर्ष चिकित्सा सलाहकार फाउची ने?

शीर्ष अमेरिकी हेल्थ एक्सपर्ट और व्हाइट हाउस के मुख्य चिकित्सा सलाहकार डॉ. एंथनी फाउची ने भी भारत में बढ़ते कोरोना वायरस को लेकर चिंता जताई। उन्होंने सलाह दी है कि भारत में राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लगाया जाना चाहिए। इसके अलावा व्यापक स्तर पर टीकाकरण किया जाना चाहिए और बड़ी संख्या में अस्थायी अस्पताल बनाए जाने चाहिए। उन्होंन महामारी से निपटने में सेना की मदद लेने की भी सलाह दी है। उन्होंने कहा कि भारत को सेना की मदद से फील्ड अस्पताल बनाने चाहिए, जैसे कि युद्ध के समय

बनाए जाते हैं।

भारत में कुल संक्रमण 2 करोड़ के पार–बीते हफ्ते हर दिन कोरोना के रिकॉर्ड नए मामले दर्ज किए गए हैं। स्थिति यह है कि अब भारत में कोरोना के कुल संक्रमितों की संख्या 2 करोड़ के पार पहुंच गई है। मंगलवार को भी भारत में कोरोना वायरस के 3 लाख 82 हजार नए मामले दर्ज किए गए हैं तो वहीं इसकी वजह से 3 हजार 786 लोगों ने एक दिन में दम तोड़ दिया। बता दें कि महज 15 दिनों में संक्रमण के 50 लाख से ज्यादा नए मामले आए हैं।

कई राज्यों ने लगाया संपूर्ण लॉकडाउन, कहीं सख्त पाबंदियां लागू

देश के कई राज्यों ने बेलगाम होते कोरोना वायरस की वजह से संपूर्ण लॉकडाउन लगा दिया है तो कुछ शहरों में सख्त पाबंदियां लगाई गई हैं। दिल्ली, बिहार, हरियाणा, ओडिशा, कर्नाटक, झारखंड, छत्तीसगढ़, पुडुचेरी जैसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में संपूर्ण लॉकडाउन लगाया गया है। इसके अलावा, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, नगालैंड, मिजोरम, असम, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल, गोवा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में आंशिक लॉकडाउन, वीकेंड लॉकडाउन या फिर रात्रि कर्फ्यू जैसी कड़ी पाबंदियां लगाकर कोरोना पर काबू करने की कोशिश की जा रही है।

राहुल गांधी ने भी की लॉकडाउन की मांग

कांग्रेस नेता राहुल गांधी बार-बार देश में लॉकडाउन लगाए जाने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने कहा है कि देश में कोरोना वायरस ऐसे चरण में पहुंच गया है जहां फुल लॉकडाउन के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचा। भारतीय बैंकर उदय कोटक ने भी सरकार से मांग की है कि वह मरीजों की मदद के लिए सेना को तैनात करे और कोरोना के प्रकोप को कम करने के लिए प्रतिबंध लागू किए जाएं। उन्होंने कहा कि सरकार को भारत के साथ ही विदेशी एक्सपर्ट्स से इस मुद्दे पर सलाह लेनी चाहिए।

लॉकडाउन लगाने में क्या है दिक्कत?

कुछ एक्सपर्ट्स का कहना है कि राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन संभव नहीं है और यह गरीबों के लिए खतरनाक साबित हो सकता है, जो पहले ही इस महामारी की वजह से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। केंद्र सरकार ने राज्यों पर यह फैसला छोड़ दिया है कि वे लॉकडाउन लगाना चाहते हैं या नहीं। ऑस्ट्रेलियन पीडियाट्रिशियन किम मलहोलांद कहते हैं कि लॉकडाउन उन लोगों के लिए संकट को और बढ़ाने का काम करेगा, जो दिहाड़ी पर काम करते हैं। कुछ एक्सपर्ट्स कहते हैं कि लॉकडाउन की बजाय, स्थानीय सरकारें उन जगहों पर गतिविधि को बंद कर दें जहां समाजिक दूरी बनाए रखना संभव नहीं है।

दिल्ली में अटकीं सांसों के बीच 'संजीवनी' लेकर पहुंची ऑक्सीजन एक्सप्रेस

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के कई अस्पताल अब भी ऑक्सीजन संकट से जूझ रहे हैं। अस्पतालों ने अधिकारियों से ऑक्सीजन आपूर्ति को लेकर गुहार लगाई और कहा कि ऑक्सीजन की किल्लत के चलते उनके मरीजों की जान दांव पर लगी हुई है। इसी बीच, बुधवार तड़के सुबह ऑक्सीजन के टैंकर लेकर ऑक्सीजन एक्सप्रेस दिल्ली के कैंट रेलवे स्टेशन पहुंची। अब इन टैंकरों को दिल्ली सरकार के अधिकारियों के सुपर्द्व किया जाएगा। दिल्ली प्रशासन के अधिकारी आगे जहां जरूरत होगी वहां इन टैंकर को पहुंचाने का काम करेंगे। आपको बता दें कि दिल्ली-एनसीआर में ऑक्सीजन एक्सप्रेस ट्रेन आठ दिन में कुल 631.53 मीट्रिक टन ऑक्सीजन लेकर आई है। उत्तर रेलवे अधिकारियों के मुताबिक 27 अप्रैल से 4 मई तक आठ अलग-अलग ट्रेन में ऑक्सीजन टैंकर आए। इन टैंकरों को दिल्ली कैंट, फरीदाबाद, तुगलकाबाद, ओखला व गुरुग्राम आदि जगहों पर उतारा गया, जिसके बाद जिला प्रशासन ने इन्हें जरूरत के मुताबिक अलग-अलग अस्पतालों में पहुंचाने का काम किया। आने वाले समय में और ऑक्सीजन एक्सप्रेस ट्रेन दिल्ली-एनसीआर के लोगों के लिए ऑक्सीजन लेकर आएंगी। इसके अलावा दिल्ली

हवाईअड्डे पर विदेशों से चिकित्सा उपकरण आने का सिलसिला जारी रहा। मंगलवार को यहां कुवैत, अमेरिका से ऑक्सीजन कंसंट्रेटर, ऑक्सीजन सिलेंडर आदि अन्य चिकित्सा उपकरण पहुंचे। बता दें कि कुछ दिनों में 25 से अधिक उड़ानें यहां 300 टन से अधिक कोविड-19 राहत सामग्री लेकर पहुंच चुकी हैं। यह उड़ानें अमेरिका, ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात, उज्बेकिस्तान, थाइलैंड, जर्मनी, कतर, हांगकांग और चीन आदि अलग-अलग देशों से आई थी। दिल्ली कस्टम विभाग के मुताबिक इन उड़ानें को पहुंचने के बाद तय प्रक्रिया पूरी कर कम से कम समय में क्लीयरेंस दी गई।

पहले चीन को मुंहतोड़ जवाब देने में की मदद

अब 'सांसों' के लिए संघर्ष करते भारत के लिए 'लाइफलाइन' बने हैं सी-17 विमान

नई दिल्ली। कोरोना संकट के बीच जब भारत सांसों के लिए संघर्ष कर रहा है, ऐसे में एक बार फिर से वही मालवाहक विमान लाइफलाइन बने हुए हैं, जो चीन से तकरार के वक्त लद्दाख में भारतीय सेना के अहम हथियार बने थे। लद्दाख में चीनी टकराव के वक्त सुर्खियां बटोरने वाले भारतीय वायुसेना के मालवाहक विमान सी-17 ग्लोबमास्टर एक बार फिर से अपने प्रयासों के चलते चर्चा के केंद्र में हैं। विदेशों से ऑक्सीजन, दवाएं और कोरोना राहत सामाग्रियों को लाने के लिए भारतीय वायुसेना के सी -17 ग्लोबमास्टर III बेड़े ताबड़तोड़ मेहनत कर रहे हैं। फिलहाल, सी-17 के आठ भारी-भरकम विमान नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय और घरेलू स्थानों पर उड़ान भर रहे हैं, जिससे ऑक्सीजन की भयावह कमी को दूर करने में मदद मिल रही है। दरअसल, भारतीय वायुसेना के परिवहन विमान सी-17 ग्लोबमास्टर्स इन दिनों दुनिया भर से ऑक्सीजन टैंकरों को लाने और भारत के प्लांट्स में पहुंचाने में जुटे हैं। सी-17 एकमात्र विमान है, जिसका उपयोग वर्तमान में विदेशों से कंटेनरों को लाने और ले जाने लिए किया जा रहा है। बता दें कि

लद्दाख में जब चीन के साथ सीमा विवाद अपने चरम पर था, तब भी मालवाहक विमान सी-17 ग्लोबमास्टर के जरिए सेना के लिए राशन और जरूरी सामान पहुंचाया गया था। इतना ही नहीं, सैन्य उपकरणों से लेकर सेना के जवानों को ट्रांसपोर्ट करने में भी इस विमान ने बड़ी भूमिका निभाई थी। एक अधिकारी की मानें तो अब तक कोरोना से संबंधित कामों के लिए ही भारतीय वायुसेना द्वारा अमेरिका में बने सी -17 विमान का इस्तेमाल किया जा रहा है। सी-17 लगभग 77 टन का पेलोड ले जा सकता है। पिछले साल लद्दाख में संवेदनशील क्षेत्र में चीन के सैन्य निर्माण का मुकाबला करने के लिए सैनिकों, टैंकों और पैदल सेना के लड़ाकू वाहनों को स्थानांतरित करने के लिए इस बेड़े का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया था। एक अधिकारी ने कहा कि सी-17 ने हमें चीनी एक्शन का मुंहतोड़ जवाब देने में मदद की थी और अब ये विमान कोरोना के खिलाफ भारत की लड़ाई में भारतीय वायुसेना के योगदान का प्रमुख चेहरा बन गए हैं। भारतीय वायुसेना के प्रवक्ता कमांडर आशीष मोगे ने कहा कि अब तक (4 मई) तक, भारतीय वायुसेना ने सिंगापुर, दुबई, बैंकॉक, फ्रैंकफर्ट और यूनाइटेड किंगडम के 54 क्रायोजेनिक ऑक्सीजन कंटेनरों और 900 ऑक्सीजन सिलेंडरों को लाया है।

भारत के सबसे पुराने धर्मगुरु मार क्राइसोस्टम का 103 साल की उम्र में निधन

थ्रू वुल्ला में स्थित मलंकरा मर्थोमा चर्च के हेडक्वार्टर के सबसे वरिष्ठ मेट्रोपोलिटन क्राइसोस्टम 103 साल के थे। वह अपने ज्ञान और बुद्धि से भरे भाषणों के लिए जाने जाते थे।

नई दिल्ली। देश के सबसे पुराने धर्मगुरुओं में से एक, डॉ. फिलिप मार क्राइसोस्टम का बुधवार को लगभग 1:30 बजे पठानमथिट्टा जिले के थ्रिवल्ला के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। उन्हें बुद्धि और ज्ञान के पुजारी के रूप में भी जाना जाता रहा है। थ्रू वुल्ला में स्थित मलंकरा मर्थोमा चर्च के हेडक्वार्टर के सबसे वरिष्ठ मेट्रोपोलिटन क्राइसोस्टम 103 साल के थे। वह अपने ज्ञान और बुद्धि से भरे भाषणों के लिए जाने जाते थे। वे समाज में कठोर मान्यताओं और व्यवस्थाओं के विरोधी थे। 27 अप्रैल 1918 में पैदा हुए क्राइसोस्टम ने दो सप्ताह पहले ही अपने 103वां जन्मदिन मनाया था। क्राइसोस्टम को जानने वाले बताते हैं कि उनका सेंस ऑफ ह्यूमर कमाल का था।

ऑक्सीजन संकट पर इलाहाबाद हाई कोर्ट सख्त, बोला- मरीजों की जा रही जान, यह नरसंहार से कम नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने ऑक्सीजन की कमी से हुई कोविड-19 मरीजों की मौत से जुड़ी खबरों पर संज्ञान लेते हुए लखनऊ और मेरठ के जिलाधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे इनकी 48 घंटों के भीतर तथ्यात्मक जांच करें। अदालत ने दोनों जिलाधिकारियों से कहा है कि वे मामले की अगली सुनवाई पर अपनी जांच रिपोर्ट पेश करें और अदालत में ऑनलाइन उपस्थित रहें। साथ ही हाई कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा है कि इससे मरीजों की जान जा रही है और यह नरसंहार से कम नहीं है। न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति अजित कुमार की पीठ ने राज्य में संक्रमण के प्रसार और पृथक-वास केंद्र की स्थिति संबंधी जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए यह निर्देश

● वहीं, दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र से कारण बताने को कहा कि कोविड-19 मरीजों के उपचार के लिए दिल्ली को ऑक्सीजन की आपूर्ति पर आदेश की तामील नहीं कर पाने के लिए उसके खिलाफ अवमानना कार्यवाही क्यों नहीं शुरू की जाए।

दिया। अदालत ने कहा, 'हमें यह देखकर दुख हो रहा है कि अस्पतालों को ऑक्सीजन की आपूर्ति नहीं होने से कोविड मरीजों की जान जा रही है। यह एक आपराधिक कृत्य है और यह उन लोगों द्वारा नरसंहार से कम नहीं है जिन्हें तरल मेडिकल ऑक्सीजन की सतत खरीद एवं आपूर्ति सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है।' पीठ ने कहा, 'जबकि विज्ञान इतनी उन्नति कर गया है कि इन दिनों हृदय प्रतिरोपण और मस्तिष्क की सर्जरी की जा रही है, ऐसे में हम अपने लोगों को इस तरह से कैसे मरने दे सकते हैं। आमतौर पर हम सोशल मीडिया पर वायरस हुई ऐसी खबरों को जांचने के लिए राज्य और जिला प्रशासन नहीं कहते, लेकिन इस जनहित याचिका में पेश अधिवक्ता इस तरह की खबरों का समर्थन कर रहे हैं, इसलिए हमारे लिए सरकार को तत्काल इस संबंध में कदम उठाने के लिए कहना आवश्यक है।'

दिल्ली हाई कोर्ट ने ऑक्सीजन की कमी पर केंद्र को फटकारा

वहीं, दिल्ली हाई कोर्ट ने मंगलवार को केंद्र से कारण बताने को कहा कि कोविड-19 मरीजों के उपचार के लिए दिल्ली को ऑक्सीजन की आपूर्ति पर आदेश की तामील नहीं कर पाने के लिए उसके खिलाफ अवमानना कार्यवाही क्यों नहीं शुरू की जाए। अदालत ने कहा, 'आप शुतुरमुर्ग की तरह रेत में सिर छिपा सकते हैं, हम ऐसा नहीं करेंगे।' पीठ ने कहा कि उच्चतम न्यायालय पहले ही आदेश दे चुका है, अब हाई कोर्ट भी कह रहा है कि जैसे भी हो केंद्र को हर दिन दिल्ली को 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आपूर्ति करनी होगी।

1 अगस्त तक भारत में हो सकती हैं 10 लाख मौतें ?

डराने वाला है एक्सपर्ट्स का यह अनुमान

नई दिल्ली। भारत में कोरोना वायरस का अभी और विकराल रूप देखने को मिल सकता है। देश में कोरोना वायरस संक्रमण के आंकड़े और उससे होने वाली मौतें बढ़ती जा रही हैं। अमेरिका स्थित इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन (आईएचएमई) का अनुमान है कि अगर 'कठोर कदम' नहीं उठाए गए तो 1 अगस्त तक भारत में 10 लाख से ज्यादा कोविड मौतें हो सकती हैं। इससे पहले संस्था ने इस तारीख तक 960,000 मौतों का अनुमान लगाया था। आईएचएमई ने कहा कि हेल्थ सिस्टम को मजबूत करने के लिए कठोर कदम उठाए बिना, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन और फेस मास्क के प्रभावी इस्तेमाल के बिना भारत की स्थिति काफी खराब दिखती है। आईएचएमई वाशिंगटन विश्वविद्यालय में एक वैश्विक स्वास्थ्य अनुसंधान केंद्र है। कोविड-19 पर इसके अनुमानों को व्यापक रूप से मजबूत मॉडल के आधार पर स्वीकार किया गया है। अनुमान है कि 1 अगस्त 2021 तक भारत में 1,019,000 कोविड मौतें हो सकती हैं। सबसे खराब स्थिति में मौतों की संख्या 12 लाख तक हो सकती है। अनुमान 25 से 30

अप्रैल के बीच के डेटा पर आधारित है। इस जानलेवा बीमारी के चलते पिछले हफ्ते कोरोना से मरने वालों की संख्या में 78त्न का इजाफा दर्ज किया गया। अमेरिका में बाइडन प्रशासन के शीर्ष अफसर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सलीवियन ने कहा कि भारत में यह महामारी काबू से बाहर हो चुकी है।

20 मई तक पीक पर होंगी मौतें

आईएचएमई का अनुमान है कि रोजाना हो रही कोविड मौतों की पीक 20 मई को होगी, जब एक दिन में 12,000 मौतें हो सकती हैं। संस्था ने पहले इस पीक के लिए 16 मई की तारीख का अनुमान लगाया था। हालांकि अगर यूनिवर्सल मास्क कवरेज (95त्न) तक अगले हफ्ते में पा लिया जाता है तो हमारे मॉडल के हिसाब से 1 अगस्त तक अनुमानित मौतों में 73,000 की कमी आ जाएगी।

किस आधार पर है अनुमान

आईएचएमई ने कहा कि उसका अनुमान इस बात पर आधारित है कि क्या होने की सबसे ज्यादा संभावना है। आईएचएमई ने कहा कि अगर वैक्सीन इसी रफ्तार पर दी जाती हैं और सरकार किस तरह सोशल डिस्टेंसिंग नियमों को लागू कराती है, इस पर मॉडल आधारित है।

CMYK

ममता दीदी के सामने दो चुनौती, कोविड-19 और राजनीतिक हिंसा से कैसे निपटेगी दीदी?

कोलकाता।(एजेंसी)।

''बांग्ला निजेर मेये के चाय'' (बंगाल अपनी बेटी को चाहता है) के नारे के साथ आक्रामक चुनाव प्रचार के जरिए ममता बनर्जी तीसरी बार पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री बनने और भाजपा को धूल चटाने में कामयाब रहीं। स्वयं को बंगाल की बेटी बताने वालीं बनर्जी ने राजनीतिक हिंसा की बढ़ती आग और तेजी से फैलते कोरोना वायरस संक्रमण के बीच बुधवार को लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की। चुनाव प्रचार के दौरान पैर में चोट लगने के बाद व्हील चेयर पर बैठ कर प्रचार करना, हवा का रुख भांपते हुए चुनावी सभाओं में चंडी पाठ करना, चुनाव प्रचार पर 24 घंटे रोक के फैसले के विरोध में धरना देना और अंततः पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में तीसरी बार तृणमूल कांग्रेस को बहुमत दिलाना ममता बनर्जी के उस जुझारू स्वभाव का परिचायक है जिसकी वजह से उन्हें ''बंगाल की शेरनी'' कहा जाता है। बनर्जी ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में शानदार प्रदर्शन कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व वाली भाजपा की चुनावी युद्ध मशीन को लगभग अकेले अपने ही दम पर हरा दिया और इसी के साथ एक नेता रूप में ममता बनर्जी और एक पार्टी के रूप में तृणमूल कांग्रेस के बीच का अंतर शून्य हो गया।

तीसरी बार की इस जीत ने राज्य में न सिर्फ बनर्जी की स्थिति को और मजबूत किया, बल्कि यह राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के खिलाफ विपक्ष को एकजुट करने में भी मदद करेगी। वर्ष 1977 से 2000 तक पश्चिम बंगाल की सत्ता पर मजबूती से काबिज रहे ज्योति बसु के बाद बनर्जी सबसे बड़ी जन नेता बन कर उभरी हैं। आधुनिक राजनीति में माहिर बनर्जी का पश्चिम बंगाल से परे नयी दिल्ली में सत्ता के गलियारों में भी खासा प्रभाव है। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस और भाजपा दोनों के साथ गठबंधन में कई बार आम चुनाव लड़े। बनर्जी ने एक दशक से अधिक पहले सिंगूर और नंदीग्राम में सड़कों पर हजारों किसानों का नेतृत्व करने से लेकर आठ साल तक राज्य में बिना किसी चुनौती के शासन किया। आठ साल के बाद उनके शासन को 2019 में तब चुनौती मिली, जब भाजपा ने पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव में 18 सीटों पर अपना परचम फहरा दिया। बनर्जी (66) ने अपनी राजनीतिक यात्रा को तब तेज धार प्रदान की, जब उन्होंने 2007-08 में नंदीग्राम और सिंगूर में नाराज लोगों का नेतृत्व करते हुए वाम मोर्चा सरकार के खिलाफ राजनीतिक युद्ध का शंखनाद कर दिया। इसके बाद वह राज्य में सत्ता के शक्ति केंद्र 'नबन्ना' तक पहुंच गई।

पढ़ाई के दिनों में बनर्जी ने कांग्रेस स्वयंसेवक के रूप में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। यह उनके करिश्मे का ही कमाल था कि वह संप्रग और राजग सरकारों में मंत्री बन गईं। राज्य में औद्योगीकरण के लिए किसानों से 'जबरन' भूमि अधिग्रहण के मुद्दे पर वह नंदीग्राम और सिंगूर में कम्युनिस्ट सरकार के खिलाफ दीवार बनकर खड़ी हो गईं और आंदोलनों का नेतृत्व किया। ये आंदोलन उनकी किस्मत बदलने वाले रहे और तृणमूल कांग्रेस एक मजबूत पार्टी के रूप में उभरकर सामने आई। बनर्जी ने कांग्रेस से अलग होने के बाद जनवरी 1998 में तृणमूल कांग्रेस की स्थापना की और राज्य में कम्युनिस्ट शासन के खिलाफ संघर्ष करते हुए उनकी पार्टी आगे बढ़ती चली गई। पार्टी के गठन के बाद राज्य में 2001 में जब विधानसभा चुनाव हुआ, तो तृणमूल कांग्रेस 294 सदस्यीय विधानसभा में 60 सीट जीतने में सफल रही और वाम मोर्चे को 192 सीट मिलीं। वहीं, 2006 के विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस की ताकत आधी रह गई और यह केवल 30 सीट ही जीत पाई, जबकि वाम मोर्चे को 219 सीटों पर जीत मिली। वर्ष 2011 के विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी की पार्टी ने ऐतिहासिक रूप से शानदार जीत दर्ज करते हुए राज्य में 34 साल से सत्ता पर काबिज वाम मोर्चा सरकार को उखाड़ फेंका। उनकी पार्टी को 184 सीट मिलीं, जबकि कम्युनिस्ट पार्टी 60 सीटों पर ही सिमट गए।

उस समय वाम मोर्चा सरकार विश्व में सर्वाधिक लंबे समय तक सत्ता में रहने वाली लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार थी। बनर्जी अपनी पार्टी को 2016 में भी शानदार जीत दिलाने में सफल रहीं और तृणमूल कांग्रेस की झोली में 211 सीट आईं। इस बार के विधानसभा चुनाव में बनर्जी को तब झटके का सामना करना पड़ा, जब उनके विश्वासपात्र रहे शुभेन्दु अधिकारी और पार्टी के कई नेता भाजपा में शामिल हो गए। बंगाली ब्राह्मण परिवार में जन्मी बनर्जी पार्टी के कई नेताओं की बगावत के बावजूद अंततः अपनी पार्टी को तीसरी बार भी शानदार जीत दिलाने में कामयाब रहीं। इस चुनाव में भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से बेदखल करने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी, लेकिन बनर्जी एक ऐसी सैनिक और कमांडर निकलीं जिन्होंने भगवा दल की चुनावी युद्ध मशीन को पराजित कर दिया। युवा

कांग्रेस नेता के रूप में बनर्जी ने कॉलेज में छात्र परिषदों का गठन किया। उन्होंने 1994 लोकसभा चुनाव में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के नेता सोमनाथ चटर्जी को हराकर बड़ी उपलब्धि हासिल की। वह 1996, 1998, 1999, 2004 और 2009 में कोलकाता दक्षिण सीट से लोकसभा सदस्य भी रह चुकी हैं। वह पूर्व प्रधानमंत्री पी वी नरसिम्हा राव सरकार में खेल राज्य मंत्री रहीं, लेकिन उन्होंने सरकार पर खेलों को नजरअंदाज करने का आरोप लगाते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उनसे 1993 में महिला एवं बाल कल्याण और मानव संसाधन विकास समेत विभिन्न पोर्टफोलियो भी छीन लिए गए। वह 1999 में राजग (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) से जुड़ीं और उन्हें तत्कालीन अटल बिहारी सरकार में रेल मंत्री बनाया गया। वह 2004 में कोयला एवं खदान मंत्री रहीं। वह 2009 लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस नीत संप्रग में शामिल हो गईं और चुनाव के बाद रेल मंत्री बनीं।

सार समाचार

कोर्ट ने नकली और खराब एन95 मास्क की बिक्री पर रोक लगाने के लिए केंद्र और दिल्ली सरकार से मांगा जवाब

नयी दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी में नमूनों को जांचने की क्षमता बढ़ाने, स्वयं जांच किट आयात करने और नकली और खराब एन95 मास्क की बिक्री पर रोक लगाने के लिये दायर जनहित याचिका पर बुधवार को केन्द्र और दिल्ली सरकार को नोटिस जारी किये। मुख्य न्यायाधीश डीएन पटेल और न्यायमूर्ति जसमीत सिंह की पीठ ने गृह एवं स्वास्थ्य मंत्रालयों के साथ-साथ दिल्ली सरकार को भी नोटिस जारी किये और उन्हें इस पर जवाब देने का निर्देश दिया।याचिका में उन लोगों को टीका लगाने में प्राथमिकता देने की गुजारिश की गई है जो पिछले चार महीने में कोविड-19से संक्रमित नहीं हुए हैं। वकील श्वेत सिंह की ओर से दायर याचिका में अधिकारियों को तत्काल एक 'वेबपेज' बनाने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है जिसके जरिए दिल्ली के लोग को कोविड-19 से संबंधित जरूरी दवाइयों, ऑक्सीजन आपूर्ति और अन्य की जानकारी आसानी से मिल सके। सिंह ने कहा कि ब्रिटेन, अमेरिका और कनाडा जैसे कई देशों नें घर पर ही खुद जांच करने का तंत्र विकसित किया है और यह यहां पर भी लागू होना चाहिए। याचिका में यह भी कहा कि गया है कि सरकार के निर्देशों के अभाव में नकली एन95 मास्क बाजार और ऑनलाइन बिक रहे हैं तथा बड़ी संख्या में लोग इन्हें यह समझ कर खरीद रहे हैं कि इससे वायरस के खिलाफ उन्हें सुरक्षा मिलेगी।

कमांडो बल एनएसजी में कोरोना से पहली मौत, सीनियर कमांडर का निधन

नयी दिल्ली। देश के संघीय आंतक रोधी कमांडो बल राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) में बुधवार को कोरोना वायरस से पहली मौत का मामला सामने आया। अधिकारियों ने बताया कि संक्रमण से एक वरिष्ठ कमांडर की मौत हो गयी। उन्होंने बताया कि ग्रुप कमांडर (समन्वय) बी के झा को कोविड-19 से संक्रमित होने के कारण ग्रेटर नोएडा के केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में बुधवार तड़के झा की मौत हो गयी। एनएसजी में कोरोना वायरस से मौत का यह पहला मामला है। अधिकारी बल की प्रशासनिक इकाई में काम करते थे। वह 53 साल के थे। बीएसएफ कैडर के 1993 बैच के अधिकारी झा बिहार के रहने वाले थे। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) से वह 2018 में प्रतिनियुक्ति पर एनएसजी में शामिल हुए थे। केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले दोनों बलों ने अपने-अपने ट्विटर अकाउंट से अधिकारी के निधन पर शोक जताया है। एनएसजी ने ट्विटर पर संदेश में कहा, ''डीजी और एनएसजी के सभी कर्मी झा के निधन से शोक में हैं। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे और उनके परिवार को दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।'' बीएसएफ ने कहा कि वह इस कठिन समय में अधिकारी के परिवार के साथ है। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक सोमवार तक एनएसजी में कोविड-19 संक्रमण के 430 से ज्यादा मामले आ चुके हैं और इनमें से 59 मरीज उपचाराधीन हैं।

सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, मराठा आरक्षण को असंवैधानिक करार दिया

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को 2018 में महाराष्ट्र द्वारा लाए गए मराठा समुदाय के लिए सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण को रद्द करते हुए कहा कि यह पहले लगाए गए 50 प्रतिशत कैप से अधिक है। महाराष्ट्र में भाजपा सरकार द्वारा लाए गए 16 फीसदी आरक्षण की संवैधानिक वैधता की जांच करने वाली पांच न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि इस कदम ने समानता का उल्लंघन किया है। पीठ में जस्टिस अशोक भूषण, एल नागेश्वर राव, एस अब्दुल नाज़ेर, हेमंत गुप्ता और एस बिंद्रा भट शामिल थे। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, 'राज्यों के पास संसद द्वारा किए गए संशोधन के कारण सामाजिक रूप से आर्थिक रूप से पिछड़ी जाति की सूची में किसी भी जाति को जोड़ने की कोई शक्ति नहीं है।'

कोरोना का कब होगा खात्मा? सरकार ने कहा- महामारी की तीसरी लहर भी आएगी

नई दिल्ली(एजेंसी)।

देश में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के कहर के बीच अब तीसरी लहर को लेकर तैयारी शुरू होने जा रही है। केंद्र सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार के विजय राघवन ने कहा है कि देश में कोरोना की तीसरी लहर भी आएगी। हालांकि, यह नहीं पता कि यह कब आएगी। लेकिन नई लहरों के लिए तैयारी शुरू करने की जरूरत है।

के विजय राघवन ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'वायरस के अधिक मात्रा में सर्कुलेशन हो रहा है और तीसरा चरण आना ही है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि यह कब आएगा। हमें नई लहरों के लिए तैयारी करनी चाहिए।' वैज्ञानिक सलाहकार ने यह भी कहा कि वायरस के स्ट्रेन पहले स्ट्रेन की तरह की फैल रहे हैं। इनमें नई तरह के संक्रमण का गुण नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि मौजूदा वेरिएंट्स के खिलाफ वैक्सीन प्रभावी हैं। देश और दुनिया में नए वेरिएंट्स आएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि एक लहर के खत्म होने के बाद सावधानी में कमी आने से वायरस को फिर से फैलने का मौका मिलता है। केंद्र सरकार ने कहा है कि कुछ राज्यों में कोरोना के केसों में कमी के संकेत जरूर मिले हैं, लेकिन 12 राज्यों में अभी भी 1 लाख से अधिक एक्टिव केस हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव ने कहा कि देश के 10 राज्यों में पॉजिटिविटी रेट 25 फीसदी से ज्यादा है और इनमें अभी और अधिक काम करने की जरूरत है। लव अग्रवाल ने बताया कि एक दिन पहले के मुकाबले 2.4 फीसदी केस बढ़े हैं तो कई राज्यों में अधिक मरीजों की मौत भी हुई है।संयुक्त सचिव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'कई राज्यों में एक दिन पहले के मुकाबले मौतों में वृद्धि देखने को मिली है। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा में अधिक मौतें हुई हैं।'

स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बताया गया कि कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, राजस्थान और बिहार जैसे राज्यों में कोरोना के प्रतिदिन वाले वाले केसों में तेजी का रुख बना हुआ है। लव अग्रवाल ने कहा, 'कुछ इलाकों को लेकर चिंता है। बेंगलुरु में पिछले एक सप्ताह में करीब 1.49 लाख केस सामने आए हैं। चेन्नई में 38 हजार केस सामने आए हैं।'

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को लगाई फटकार, कहा- अफसरों को जेल में डालने से ऑक्सिजन नहीं आएगी

नई दिल्ली।(एजेंसी)।

उच्चतम न्यायालय ने उच्च न्यायालय द्वारा केंद्र को जारी अवमानना नोटिस पर कहा कि, अधिकारियों को जेल में डालने से शहर में ऑक्सीजन नहीं आएगी, हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि जिंदगियां बचें।सॉलीसीटर जनरल ने उच्चतम न्यायालय से कहा,यह प्रतिकूल मुकदमेबाजी नहीं है; केंद्र, दिल्ली सरकार निर्वाचित सरकारें हैं और कोविड-19 मरीजों की सेवा के लिए भरसक कोशिश कर रहीं हैं ।

उच्चतम न्यायालय ने केंद्र से पूछा, हमें बताइए कि आपने पिछले तीन दिन में दिल्ली को कितनी ऑक्सीजन आवंटित की है?उच्चतम न्यायालय ने कहा कि दिल्ली में कोविड वैश्विक महामारी बहुत गंभीर चरण में है और इसके साथ ही कोर्ट ने केंद्र से पिछले तीन दिन में की गई ऑक्सीजन की आपूर्ति के बारे में पूछा।उच्चतम न्यायालय ने कहा, यह पूरे भारत में फैली महामारी है और हमें ऑक्सीजन आपूर्ति सुनिश्चित करने के तरीके तलाशने होंगे, हमारे पास दिल्ली के लोगों को देने के लिए जवाब नहीं है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा, दिल्ली में हम भी हैं। हम असहाय हैं और फोन पर उपलब्ध हैं। हम सोच सकते हैं कि नागरिकों के ऊपर क्या बीत रही है। न्यायालय ने कहा, हमें दिल्ली के लिए 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आपूर्ति की तरफ बढ़ना होगा; केंद्र से कुछ समय बाद इसके बारे में उसे अवगत कराने को कहा।उच्च न्यायालय ने कहा, ऐसा प्रतीत होता है कि दिल्ली सरकार ने तरल ऑक्सीजन का बफर भंडार बनाने और इसके वितरण को सरल बनाने के लिए कदम नहीं उठाए हैं।

दुनिया के कई देशों से आ रही राहत सामग्री का बड़ा हिस्सा मिल रहा ज्यादा संक्रमित राज्यों को, जानें कैसे होता है आवंटन

नई दिल्ली।(एजेंसी)।

, जागरण ब्यूरो। कोरोना से लड़ाई में मदद के लिए दुनिया के कई देशों से भारत में राहत सामग्री को जल्द से जल्द जरूरतमंदों तक पहुंचाने का काम शुरू हो गया है। फिलहाल कोरोना से अधिक संक्रमित राज्यों को वितरण में प्राथमिकता दी जा रही है। सरकार के मुताबिक गत दो मई तक 24 श्रेणी के 40 लाख आइटम विभिन्न राज्यों की 89 संस्थाओं में वितरित किए जा चुके हैं। इनमें बाईपैप मशीन, आक्सीजन कंसंट्रेटर्स, आक्सीजन सिलेंडर, पीएसए आक्सीजन प्लांट्स, पल्स आक्सीमीटर, रेमडेसिविर, फेबिफ्लू, एन-95 मास्क व पीपीई किट जैसे आइटम शामिल हैं।

दो मई तक 24 श्रेणी के 40 लाख आइटम विभिन्न राज्यों की 86 संस्थाओं को मिले

राहत सामग्री के वितरण के लिए स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन एक सेल का गठन किया गया है जो विदेश से आने वाली सभी प्रकार की सामग्री को रिसीव करने का काम करता है और जरूरत के हिसाब से उसके वितरण करता है। इस सेल ने गत 26 अप्रैल से अपना काम करना शुरू कर दिया है। इस सेल में शिक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, नागरिक उड्डयन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं।

हर रोज सुबह 9.30 बजे इस सेल की बैठक होती है जिसमें सभी प्रकार के लंबित काम निपटाए जाते हैं। सेल के काम व सामग्री व उसके वितरण की देखरेख के लिए नीति आयोग के सीईओ के नेतृत्व में एक कमेटी का गठन किया गया है। इस कमेटी में व्यय विभाग के सचिव, विदेश मंत्रालय व स्वास्थ्य मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं।विदेश से आने वाली राहत सामग्री के समन्वय के लिए विदेश मंत्रालय नोडल एजेंसी का काम कर रहा है।

सरकार का दावा है कि इस राहत सामग्री को खोलने उसे फिर से पैक करने और जरूरतमंद राज्य तक भेजने का काम कम से कम समय में किया जा रहा है। सामग्री का आवंटन करते वक्त राज्यों की स्वास्थ्य सुविधा और वहां संक्रमण की स्थिति को ध्यान में रखा जाता है। एम्स, केंद्रीय अस्पताल व डीआरडीओ के माध्यम से इस राहत सामग्री को राज्यों तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है। सामान के वितरण में इस बात का भी ध्यान रखा जा रहा कि किन जगहों पर इलाज के लिए संक्रमित अधिक आ रहे हैं। अप्रैल के आखिरी सप्ताह से विदेश से कोरोना राहत संबंधी आइटम भेजे जाने की गति तेज हो गई है।

जम्मू-कश्मीर में सियासी दलों ने की केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह के खिलाफ आरोपों के जांच की मांग

जमू ।(एजेंसी)।

जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक दलों ने केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह के खिलाफ भाजपा नेता और पूर्व विधान पार्षद विक्रम रंधावा द्वारा लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है। जम्मू-कश्मीर कांग्रेस ने सिंह के इस्तीफे और आरोपों की उच्चस्तरीय जांच की मांग की है। नेशनल कांफ्रेंस और जम्मू-कश्मीर अपनी पार्टी (जेकेएपी) ने भी मामले के जांच की मांग की है। भाजपा की जम्मू-कश्मीर इकाई के सचिव और स्ट्रोन क्रशर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष रंधावा ने खनन नीति को लेकर जम्मू में जितेन्द्र सिंह के कार्यालय पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए हैं। रंधावा ने इस मामले को लेकर आत्मदाह करने की भी धमकी दी थी। भाजपा की अनुशासनात्मक समिति ने रंधावा को इस मामले में कारण बताओ नोटिस भी जारी किया है। कांग्रेस की युवा इकाई के अध्यक्ष उदय भानु चिब के नेतृत्व में मंगलवार को पार्टी कार्यकर्ताओं के एक समूह ने कांग्रेस मुख्यालय के सामने एकत्र होकर केन्द्रीय मंत्री के इस्तीफे की मांग की। चिब ने पत्रकारों से कहा, ''रंधावा के सनसनीखेज़ खुलासे ने खनन माफिया और भाजपा की मिलीभगत का भंडाफोड़ कर दिया है। इन आरोपों को लेकर उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए।'' इससे पहले कांग्रेस के पार्षद गौरव चोपड़ा ने कहा कि स्थानीय लोगों को लूटने के लिए सुनियोजित तरीके से खनन और शराब की दुकानों की नीलामी की जाती है। जम्मू-कश्मीर प्रदेश कांग्रेस समिति ने जितेन्द्र सिंह के इस्तीफे की मांग करते हुए एक बयान जारी कर कहा, '' शक्तिशाली लोगों के संरक्षण में चलाई जा रही ''हफ्ता संस्कृति'' की जांच होनी चाहिए। इस मामले में कानून को अपना काम करना चाहिए।'' कांग्रेस ने कहा कि यह मामला केन्द्र की मोदी सरकार और जम्मू-कश्मीर प्रशासन के लिए एक परीक्षा की घड़ी है, इसलिए जितेन्द्र सिंह को हटाकर एक स्पष्ट संदेश दिया जाना चाहिए अन्यथा आम जनता का विश्वास प्रशासन से उठ जायेगा। नेकां ने आरोपों की जांच उच्चतम न्यायालय के मौजूदा न्यायाधीश से कराने की मांग की है। पार्टी प्रवक्ता ने एक बयान में कहा, ''आरोप और किसी ने नहीं बल्कि भाजपा के प्रदेश सचिव और विधान परिषद के पूर्व सदस्य ने लगाये हैं। यह गंभीर प्रकृति के हैं और इन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।'' प्रवक्ता ने बताया कि समयबद्ध तरीके से स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच के बाद ही सच सामने आएगा। जेकेएपी के प्रांतीय अध्यक्ष और पूर्व मंत्री मंजीत सिंह ने भी कहा कि सच सामने आने के लिए निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

दिल्ली HC के अवमानना नोटिस के खिलाफ केन्द्र की याचिका पर सुनवाई पर सहमत सुप्रीम कोर्ट

नयी दिल्ली।(एजेंसी)।

उच्चतम न्यायालय राजधानी में ऑक्सीजन की आपूर्ति के आदेश के अनुपालन में कोताही के कारण दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा जारी अवमानना नोटिस के खिलाफ दायर केन्द्र सरकार की याचिका पर बुधवार को सुनवाई के लिये सहमत हो गया। इस याचिका में उच्च न्यायालय द्वारा केंद्र के अधिकारियों की व्यक्तिगत उपस्थिति के निर्देश को भी चुनौती दी गई है। उच्च न्यायालय ने मंगलवार को केंद्र सरकार को कारण बताओ नोटिस जारी कर पूछा था कि कोविड-19 मरीजों के उपचार के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति के बारे में उसके आदेश का अनुपालन करने में विफल रहने पर उसके खिलाफ अवमानना की कार्यवाही क्यों नहीं की जाए। सॉलिसीटर जनरल तुषार मेहता यह मामला प्रधान न्यायाधीश एन वी रमण की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष उठाया क्योंकि देश में कोविड-19 प्रबंधन पर स्वतः संज्ञान लेकर सुनवाई कर रही न्यायमूर्ति डी वाई चंद्रचूड़ की पीठ बुधवार को उपलब्ध नहीं थी।

मेहता ने कहा, 'मैंने इस मामले का उल्लेख मामले सूचीबद्ध करने वाले रजिस्ट्रार के समक्ष किया था। इसमें कुछ अत्यावश्यक है। इसे आज ही सुने जाने की जरूरत है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने ऑक्सीजन मुद्दे के संबंध में कल आदेश पारित किया था। उच्च न्यायालय ने....केंद्र सरकार के अधिकारियों से अवमानना के लिए व्यक्तिगत तौर पर मौजूद रहने को कहा था।' प्रधान न्यायाधीश नीत पीठ ने कहा, 'हम क्या कर सकते हैं' और मामले की तत्कालिकता के बारे में दोबारा बताए जाने पर पीठ ने कहा कि इसकी सुनवाई न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ करेगी।

शीर्ष अदालत ने 30 अप्रैल को पारित आदेश में केंद्र को दिल्ली में तीन मई की मध्यरात्रि तक ऑक्सीजन की कमी संबंधी स्थिति को दुरुस्त करने का निर्देश दिया था और इसका अनुपालन नहीं करने पर संज्ञान लेते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को मंगलवार को कारण बताओ नोटिस जारी किया था। उच्च न्यायालय ने कहा था, 'इसलिए हम, केंद्र सरकार को कारण बताने का निर्देश देते हैं कि हमारे मई के और उच्चतम न्यायालय के 30 अप्रैल के आदेश का अनुपालन नहीं करने के लिए अवमाना की कार्रवाई क्यों न की जाए। उक्त नोटिस का जवाब देने के लिए, हम पीयूष गोयल और सुमित्रा दावरा (केंद्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारी) की कल मौजूदगी का निर्देश देते हैं।' अदालत ने कहा, 'आप शुतुरमुर्ग की तरह रेत में अपना सिर छिपा सकते हैं, हम नहीं।' साथ ही कहा उच्चतम न्यायालय पहले ही निर्देश दे चुका है कि केंद्र को किसी भी तरीके से दिल्ली को रोजाना 700 मीट्रिक टन ऑक्सीजन रोजाना उपलब्ध करानी होगी।

कोरोना से लड़ाई की कमान क्स्ह्र से लेकर नितिन गडकरी को सौंपें: सुब्रमण्यम स्वामी

नई दिल्ली। कोरोना वायरस की दूसरी लहर के कहर से जूझ रही भारत सरकार को भाजपा के राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने एक सुझाव दिया है। सुझाव यह है कि कोरोना से लड़ाई की कमान पीएमओ से लेकर केंद्रीय सड़क परिवहन और राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को सौंपी जानी चाहिए। भाजपा सांसद ने इस संबंध में एक ट्वीट किया जोकि सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया है।

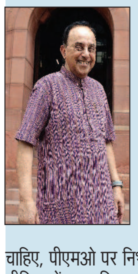

सुब्रमण्यम स्वामी ने अपने ट्वीट में लिखा है कि जैसे भारत ने इस्लामिक और ब्रिटिश घुसपैठियों का मुकाबला किया, वैसे ही कोरोना वायर का मुकाबला भी कर लेगा। स्वामी ने अपने ट्वीट में आगे लिखा है कि अगर हम जरूरी कदम नहीं उठा पाये तो हमें एक और लहर का सामना करना पड़ सकता है, जो बच्चों को अपने निशाने पर लेगी। स्वामी इसी में आगे लिखते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ऐसे में इस लड़ाई की जिम्मेदारी केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को देनी चाहिए, पीएमओ पर निर्भर रहना बेकार है। भाजपा सांसद के इस ट्वीट पर सोशल मीडिया में बहस छिड़ गयी और कई लोगों ने जब स्वामी से सवाल पूछे कि नितिन गडकरी को ही क्यों कमान सौंपी जानी चाहिए तो उन्होंने कहा कि कोरोना संकट से निपटने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर फ्रेमवर्क की सख्त जरूरत है, जिसमें केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने खुद को साबित किया है। कुछ यूजर्स ने जब यह पूछा कि क्या सुब्रमण्यम स्वामी पीएमओ की कार्यक्षमता पर सवाल खड़े कर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि क्स्ह्र तो मात्र एक विभाग है, ना कि प्रधानमंत्री खुद हैं। उल्लेखनीय है कि स्वामी की यह टिप्पणी तब आई है जब हाल ही में कांग्रेस की ओर से कोरोना की बिगड़ती स्थिति पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन का इस्तीफा मांगा गया था।

पार्वती घाटी में घूमने की हैं कई बेहतरीन जगहें

पार्वती घाटी के दूर के छोर पर स्थित, तोश को सुंदर घाटी का अंतिम गाँव माना जाता है जो हिप्पी और साहसिक उत्साही लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है। तोश की सड़क लंबी और घुमावदार है। तोश अन्य शहरों के विपरीत है जो मणिकरण या कसोल जैसे पार्वती नदी के साथ स्थित हैं।

भारत अपनी भौगोलिक विविधता के लिए जाना जाता है और यही कारण है कि यहां के हर राज्य में आपको प्रकृति का एक अलग सौंदर्य देखने को मिलेगा। ऐसा ही एक स्थान हिमाचल प्रदेश में भी स्थित है। भुंतर से स्पीति तक फैली, पार्वती घाटी हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित है। घाटी के पास घूमने के लिए कई आकर्षक स्थान हैं। रुद्र-नाग, सर्प के आकार का झरना, खिरगंगा के देवदार के जंगल जहाँ भगवान शिव का ध्यान किया जाता है, पांडु पुल का चट्टान का निर्माण और पिन-पार्वती दर्रा कुछ लोकप्रिय पर्यटन आकर्षण हैं। पिन वैली नेशनल पार्क एक अन्य पर्यटक आकर्षण है और यह हिम तेंदुए सहित वन्यजीवों की आबादी के लिए जाना जाता है। तो चलिए आज हम आपको पार्वती घाटी के आसपास घूमने की कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बता रहे हैं-

कसोल

हिमाचल प्रदेश में मिनी इज़राइल के रूप में जाना जाता है, कसोल पार्वती घाटी में एक हिल स्टेशन है। यह कुल्लू से 42 किमी पूर्व में 1640 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। कसोल अपनी सुंदर घाटी, पहाड़ों और महान जलवायु के कारण पूरे वर्ष बैकपैकर्स, ट्रेकर्स और प्रकृति के प्रति उत्साही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर मौजूद कैफे और रेस्तरां स्थानीय व्यंजनों के साथ इजरायल के व्यंजन परोसते हैं। कसोल में पार्वती नदी सफेद पानी राफ्टिंग के लिए आदर्श है। कसोल में पूरे साल सुखद मौसम रहता है। कसोल घूमने का सबसे अच्छा समय मार्च से मई तक है।

तोश

पार्वती घाटी के दूर के छोर पर स्थित, तोश को सुंदर घाटी का अंतिम गाँव माना जाता है जो हिप्पी और साहसिक उत्साही लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है। तोश की सड़क लंबी और घुमावदार है। तोश अन्य शहरों के विपरीत है जो मणिकरण या कसोल जैसे पार्वती नदी के साथ स्थित हैं। हालाँकि कुछ हद तक इसका व्यवसायीकरण हो गया है, फिर भी सड़कें, दुकानें और घर समान हैं। आप दिन में अपने चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ों और ग्लेशियरों को देख सकते हैं और रात में आकाश में फैले मिल्की वे को देख सकते हैं। या आप पास के ट्रेकिंग ट्रेल्स पर घूमने जा सकते हैं।

रसोल

पार्वती घाटी के लोकप्रिय शहर कसोल से लगभग 4 किमी की दूरी पर स्थित, रशोल या रसोल एक गाँव है जो तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रहा है। पार्वती नदी की भीड़ से दूर, रसोल पहाड़ों में ऊंचे स्थान पर स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 3,000 मीटर की ऊंचाई पर है।

एडवेंचर्स प्लेसेस पर घूमना लगता है अच्छा तो शादी से पहले एक बार इन जगहों पर जरूर जाएं

भारत एक टूरिस्ट फ्रेंडली देश है। यहां अंतरराष्ट्रीय से लेकर घरेलू पर्यटकों के देखने व घूमने के लिए काफी कुछ है। फिर भले ही आप प्रकृति प्रेमी हों या कुछ वक्त शांत माहौल में खुद के साथ बिताना चाहते हैं। आपको बीचेस पर घूमना पसंद हो या फिर कुछ रोमांचक करना, भारत में आपको हर तरह की एक्टिविटी करने का मौका मिलेगा। आज इस लेख में हम आपको भारत की कुछ एडवेंचर्स जगहों के बारे में बता रहे हैं, जहां पर आप भरपूर मौज-मस्ती करके एक नया एक्सपीरियंस ले सकते हैं। तो चलिए जानते हैं भारत की कुछ एडवेंचर्स प्लेसेस के बारे में-

ऋषिकेश

ऋषिकेश उत्तरी राज्य उत्तराखंड में गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह शहर ज्यादातर तीर्थस्थल है और इसे भारत की योग राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। हालांकि, रोमांच चाहने वाले पर्यटकों के लिए यहाँ कुछ साहसिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। आप गंगा नदी में राफ्टिंग, रॉक एंड क्लिफ चढ़ाई जैसी गतिविधियां कर सकते हैं, पास के जंगल में एक सर्वाइवल कैंप में भाग ले सकते हैं या बंजी जंपिंग भी कर सकते हैं।

लद्दाख

लद्दाख को कई मठों की भूमि के रूप में जाना जाता है। यह शहर भारत में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित है। यहां के आसपास की भूमि की स्थलाकृति, ट्रेकिंग और राफ्टिंग के लिए एक आदर्श स्थान है। लद्दाख की प्रसिद्ध चदर ट्रेक, जो एक जमी हुई नदी पर एक ट्रेक है, यहाँ होता है। इसके अलावा, आप खूबसूरत ज़ांस्कर घाटी में राफ्टिंग कर सकते हैं।

गुलमर्ग

गुलमर्ग जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में स्थित है। यहां पर आने के बाद आपको स्विट्जरलैंड के एक विशिष्ट गांव की याद जरूर आएगी। पूरा शहर एक उच्च ऊँचाई पर स्थित है और भारी बर्फबारी का सामना करता है। यहां प्राप्त बर्फबारी होने के कारण, हेलि-स्कीइंग यहां का एक लोकप्रिय रोमांचक खेल है। हेलि-स्कीइंग में स्की पर हेलीकॉप्टर से कूदना और कठोर ठंडी हवाओं का सामना करना शामिल है।

मनाली

मनाली उत्तरी राज्य हिमाचल प्रदेश में स्थित एक टाउनशिप है और एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल भी है। मनाली में आपको कई एडवेंचर्स एक्टिविटी जैसे पार्वती घाटी में ट्रेकिंग आदि करने का मौका मिलेगा। हालांकि, यहां सबसे प्रसिद्ध रोमांचक गतिविधियों में से एक बाइकिंग करना है। मार्ग आपको मनाली में स्थित विभिन्न गाँवों और इसके आसपास के इलाकों में ले जाएंगे। इस दौरान आपको कुछ सुंदर परिदृश्यों से गुज़रना होगा और वास्तव में आप इस जगह का अनुभव कर सकते हैं।

ऋषिकेश उत्तरी राज्य उत्तराखंड में गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह शहर ज्यादातर तीर्थस्थल है और इसे भारत की योग राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। हालांकि, रोमांच चाहने वाले पर्यटकों के लिए यहाँ कुछ साहसिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

पुदुचेरी में यह जगह करवाएंगी आपको एक अलग अनुभव

तमिलनाडु राज्य का पुदुचेरी शहर कई मायनों में देश के अन्य शहरों से काफी अलग है। दरअसल, तमिलनाडु के पुदुचेरी में करीबन 300 साल तक फ्रांसीसी अधिकार रहा, जिसका व्यापक प्रभाव इस शहर पर पड़ा। आज भी पुदुचेरी में आपको फ्रांसीसी वास्तुशिल्प और संस्कृति की छटा दिखेगी। इतना ही नहीं, यहां का प्राकृतिक सौंदर्य तो अनुपम है ही, साथ ही इसका अपना एक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व भी है। घुमक्कड़ी के शौकीन लोगों को एक बार इस शहर का भी दौरा करना चाहिए। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको पुदुचेरी में घूमने लायक कुछ अच्छी जगहों के बारे में बता रहे हैं-

गिंगी किला

पुदुचेरी में घूमने के लिए गिंगी किला सबसे अच्छे स्थानों में से एक है। किले को 1921 में एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में घोषित किया गया है। एक अद्वितीय वास्तुशिल्प उपलब्धि होने के अलावा यह राज्य के कुछ महत्वपूर्ण किलों में से एक है। इतिहास और वास्तुकला प्रेमियों को पुदुचेरी में छुट्टियों में इस जगह पर एक बार जरूर जाना चाहिए।

श्री गोकिलम्बल थिरुक्मेश्वर मंदिर

पुदुचेरी में देखने के लिए अद्वितीय स्थानों में से एक, मंदिर में एक विशाल 15 मीटर लंबा मंदिर रथ है जो आम तौर पर ब्रह्मोत्सवम के दौरान एक जुलूस पर निकाला जाता है, जो मूल रूप से पुदुचेरी का वार्षिक उत्सव है। यह 2 दिनों में पुदुचेरी में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है।

जवाहर टॉय म्यूजियम

पुदुचेरी में देखने के लिए अद्वितीय स्थानों में से एक, जवाहर टॉय म्यूजियम एक डॉल हाउस है, जिसमें विभिन्न भारतीय राज्यों से लाए गए 140 से अधिक डॉल हैं। जवाहर टॉय म्यूजियम मुख्य शहर में, पुराने प्रकाश स्तंभ पर स्थित है, जो गांधी मैदान के पास है। इस संग्रहालय में कुछ दुर्लभ सजावटी गुड़िया और खिलौने हैं। यह केवल बच्चों और स्कूल के छात्रों को ही नहीं, बल्कि हर आंगतुक को एक आनंदमय अनुभव प्रदान करते हैं।

चुन्नमबार बोट हाउस

पुदुचेरी के प्राचीन बैकवाटर पर नाव की सवारी करके आप यकीनन खुद को प्रकृति के करीब पाएंगे। चुन्नमबार बोट हाउस प्रकृति प्रेमियों के लिए यकीनन एक बेहतरीन जगह है, जहां पर आप न केवल नाव की सवारी कर सकते हैं, बल्कि आश्चर्यजनक प्राकृतिक स्थानों का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

सीता कल्चरल सेंटर

पुदुचेरी में सीता कल्चरल सेंटर एक बहुत प्रसिद्ध फ्रेंको-भारतीय सांस्कृतिक केंद्र है और पुदुचेरी में घूमने के लिए कई स्थानों में से एक है। कैंडप्पा मुदलियार स्ट्रीट पर स्थित, यह पुदुचेरी के सबसे बेहतरीन पर्यटक आकर्षणों में से एक है। यहां पर इंडियन कुकिंग, कोलम लर्निंग, आयुर्वेदिक मेडिसिन, योगा, पिलेट्स, और तमिल भाषा से, विभिन्न दिलचस्प मल्टीपल और सिंगल सेशन क्लास हैं।

संपादकीय

खेल भी स्थगित

इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का स्थगित या फिलहाल रद्द होना तय था, सिर्फ यह निश्चित नहीं था कि यह फैसला कब किया जाता है। जब एक के बाद एक खिलाड़ियों और अन्य संबंधित लोगों के कोरोना संक्रमित होने की खबरें आने लगीं और इस वजह से मैच रद्द करने पड़े, तो बीसीसीआई के पास आईपीएल रद्द करने के अलावा कोई चारा भी नहीं था। वैसे तो इस वक्त यह प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए भी बीसीसीआई की बहुत आलोचना हो रही थी। हालांकि, यह कह सकते हैं कि जब इसे आयोजित करने का फैसला किया गया था, तब कोविड की लहर ज्यादा नहीं थी, लेकिन प्रतियोगिता के शुरू होते-होते लहर तेज होने लगी थी। आईपीएल की आलोचना तब और तीखी हो गई, जब विदेशी खासकर ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने भारत में कोरोना को लेकर फिक्र जतानी शुरू की और कुछ खिलाड़ियों और इसके अन्य पक्षों से जुड़े पूर्व खिलाड़ियों ने आईपीएल छोड़ने का फैसला किया। भारत में खिलाड़ियों व बीसीसीआई के बीच जैसा रिश्ता है, उसे देखते हुए हम भारतीय खिलाड़ियों से मुखर विरोध या साफ राय देने की उम्मीद नहीं कर सकते, पर जब एक के बाद एक खिलाड़ी व सहयोगी स्टाफ बीमार होने लगे, तब बीसीसीआई के पास आयोजन रद्द करने के सिवा कोई चारा नहीं रहा।

बीसीसीआई बड़े रसूख वाले लोगों का संगठन है और इसकी हैसियत किसी आम खेल संगठन से कई गुना ज्यादा है। आईपीएल भी दुनिया का सबसे महंगा क्रिकेट आयोजन है, जिसमें कई हजार करोड़ रुपये दांव पर लगे होते हैं और इसके एक साल रद्द होने का मतलब है कई हजार करोड़ रुपये का घाटा। इससे जिनके हित जुड़े हैं, उनमें खिलाड़ियों और टीम से जुड़े लोगों के अलावा प्रायोजक, टीवी चैनल, विज्ञापन व मार्केटिंग उद्योग, टीमों को सामान मुहैया करने वाली कंपनियां शामिल हैं। इसलिए कुछ हो जाए आईपीएल रद्द नहीं होता। तमाम आलोचनाओं के बीच रसूख, लोकप्रियता और आर्थिक हितों की वजह से ही यह आयोजन इस भयावह कोविड लहर में भी चलता रहा, पर यह तकरीबन असंभव था कि अगर देश में ऐसी कोरोना लहर चल रही है, तो आईपीएल से जुड़े लोग उससे बच जाते। दावा किया जा रहा था कि आईपीएल से जुड़े लोग बायो बबल में सुरक्षित हैं, मगर ऐसे प्रकोप में कोई भी ऐसा बायो बबल कैसे सुरक्षित रह सकता है, जिसमें सैकड़ों लोग हों, जहां खिलाड़ी होटलों में रहते हों, बस से रोज स्टेडियम आते-जाते हों? वैसे भी, भारत में इस तरह की चौकसी बरतना असंभव है, खासकर जब मामला क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेल का हो। ऐसी खबरें आ भी रही थीं कि बायो बबल में काफी दरारें हैं और लोग अंदर-बाहर आ-जा रहे हैं। पिछले साल दुबई में आयोजन इसलिए कामयाब हो गया, क्योंकि तब कोरोना की लहर इतनी शक्तिशाली नहीं थी और यूएई में तो उसका प्रकोप और भी कम था। अब बीसीसीआई के पास सावधानी से कारोबार समेटने की जिम्मेदारी है, ताकि और ज्यादा लोग बीमार न हों। विदेशी खिलाड़ियों की भी जिम्मेदारी है, ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने भारत से किसी के आने पर पाबंदी लगा दी है। इन खिलाड़ियों को सुरक्षित रखना भी बीसीसीआई का काम है। यहां तक स्थिति पहुंचने के पहले ही आयोजन स्थगित कर दिया जाता, तो बेहतर होता, पर देर आयद दुरुस्त आयद। सलामत रहेंगे, तो खेल फिर जारी रहेगा।

रग पर हाथ

लगता है दिल्ली हाई कोर्ट ने राजनीति की उस रग पर हाथ रख दिया है जिसके कारण राजधानी मे केंद्र और राज्य के बीच मची खींचतान में फंसी बेबस जनता कोरोना की सुनामी में दम तोड़ने पर मजबूर है। उसकी ऑक्सीजन, अस्पताल में एक अदद आइसीयू बेड़ और जरूरी दवाओं की पुकार सुनने वाला कोई नहीं है। गनीमत है कि राजधानी के किसी अस्पताल से पिछले 24 घंटों में इस संकट के कारण किसी मौत की खबर नहीं आई लेकिन देखा जाए तो इसके पीछे अस्पतालों में भर्ती लोगों के परिजनों की जी तोड़ कोशिशें हैकि अपने मरीजों की जान बचाने के लिए येन केन प्रकारेण ऑक्सीजन सिलिंड़रों का जुगाड़ कर रहे हैं। संकट तो है ही। यही कारण है कि दिल्ली में मौतों की संख्या हर दिन नया रिकॉर्ड़ बना रही है। सोमवार को 448 लोगों की मौत हुई जो एक दिन में अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। 15 दिन से अधिक हो गए जब से सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट ऑक्सीजन संकट का हल निकालने की कोशिश में रोजाना मगजमारी कर रहे हैं। दोनों अदालतें साफ शब्दों में केंद्र सरकार को बता चुकी हैं कि दिल्ली के लिए ऑक्सीजन की व्यवस्था करना केंद्र की जिम्मेदारी है। अनेक चेतावनियों के बावजूद हालात जस के तस बने रहे तो मंगलवार को दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि आप अंधे हो सकते हैं लेकिन हम आंखें मूंदकर नहीं बैठ सकते। कोर्ट ने कहा कि आप इतने असंवेदनशील कैसे हो सकते हैं कि लोग रोज मर रहे हैं और उन्हें जरूरी ऑक्सीजन नहीं मिल रही। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार दिल्ली को अगर 700 मीट्रिक टन आक्सीजन की जरूरत है तो जरूर दी जाए वरना आप अदालत की अवमानना की कार्रवाई के लिए तैयार रहें। उल्लेखनीय है कि दिल्ली सरकार का कहना है कि दिल्ली को उसके कोटे की आवंटित 976 मीट्रिक टन ऑक्सीजन में से भी सिर्फ 44/ की ही आपूर्ति की जा रही है। मंगलवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने एक महह्मवपूर्ण घोषणा करते हुए दिल्ली के 72 लाख राशनकार्ड़ धारकों को दो माह तक निशुल्क राशन देने का फैसला किया है। कोरोना के कारण धंधे में आई कमी के कारण राजधानी के 1.56 लाख ऑटो-टैक्सी चालकों को भी पांच-पांच हजार रुपये की मदद देने का फैसला किया है। पिछले लॉकड़ाउन में मजदूरों को मदद दी गई थी।

प्रोफेसर के नोट्स/दिलीप शाक्य

इंडियन स्किमर्स

हमने चम्बल नदी के उस पार देखा। कतारों में खड़े ट्रक और ट्रैक्टर अपनी हेडलाइटों के साथ सरकने लगे थे। हेड़लाइटों के प्रकाश में ट्रॉलियों की गीली रेत सोने-सी चमक रही थी। चम्बल की रेत पर इस पार बैठे हम सूर्य के स्वागत को व्याकुल थे। जैसे-जैसे क्षितिज की लालिमा नदी के पानी में घुलती गईग वैसे-वैसे हर श्य्य साफ होता गया। मुझे कवि शमशेर की कविता 'उषा' याद हो आई-'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।' भोर हो रही थी। हमारी उनींदी आंखें चम्बल के अद्भुत सौंदर्य को अचरज से देख रही थीं।

हम जहां बैठे थे वहां से कोई आध किलोमीटर की दूरी पर एक नाव बंधी थी। नाव देखते ही प्रोफेसर ने उठने का इशारा किया-'आओ, उधर ही चलें। नाव है तो नाव चलाने वाला भी कोई आएगा।' हम नाव के पास पहुंचने से पहले ही रुक गए। एक मादा घड़ियाल रेत में अंडा छोड़कर पानी में उतर रही थी। 'घड़ियाल के अंडे?' मैंने सोचा और कुछ डर-सा गया। प्रोफेसर ने कहा-'डरो नहीं। घड़ियाल चम्बल के पानी की खासियत हैं। कहीं-कहीं मगरमच्छ भी हैं। रेत-खनन के कारोबार ने अब इनकी संख्या कम कर दी है। वो सामने देखो-इंडियन स्किमर्स। ये बहुत रेयर पक्षी हैं। अब केवल चम्बल में ही बचे हैं। इन्हें पचनीरा भी कहते हैं।' स्किमर्स देख कर दिल खुश हो गया। ऐसी चिड़िया तो कभी देखी नहीं पहले। कभी किनारे की रेत पर, कभी पानी मेंग कभी आसमान में। वे भांति-भांति के करतब दिखा रही थीं। उनकी बनावट और सज-धज तो देखते ही बनती थी। हल्के लाल रंग की लंबी तीखी चोंच, एकदम सफेद गर्दन और काले पंख। ऊंची-नीची उड़ानें और उनका मधुर कलरव। मैं उनके संसार में कहीं खो-सा गया। तभी कहीं से बैलों के गले में बजती घंटियों की रुन-झुन का स्वर सुनाई दिया। जिधर से मोर बोल रहे थे उधर से एक बैलगाड़ी चली आ रही थी। बैलगाड़ी पर बैठा किसान लिहो-लिहो कहते हुए बैलों को हांक रहा था। उसके हाथ में बेंत की छड़ी थी जिसके सिरे पर लैदर की एक ट्रिप झूल रही थी। मैंने पूछा तो प्रोफेसर ने बताया कि इसे यहां पैनिया कहते हैं। बैलगाड़ी पर फलों और सब्जियों की बोरियां लदी थीं। देखते ही हमारी भूख जाग उठी। संकट को समाधन मिल गया था। हमारी आंखें अप्रत्याशित रूप से चमक उठीं।

शिक्षित, लेकिन कमजोर होता समाज

विजय कुमार चौधरी

शिक्षा का इतिहास मानव समाज एवं सभ्यता के विकास के इतिहास का सहचर रहा है। उसी तरह शुरू से ही शिक्षा एवं समाज का नाता धर्म से भी रहा है। सभी धर्मों में शिक्षा को सर्वोत्कृष्ट स्थान दिया गया है। गीता में कहा गया है न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते अर्थात इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र अन्य कुछ भी नहीं है। ज्ञान का अभिप्राय विद्या से है और विद्या सीधे रूप से शिक्षा से जुड़ी है। इस्लाम के संस्थापक हजरत मुहम्मद ने कहा था, 'मां की गोद से लहद तक (यानी जन्म से मृत्यु तक) इल्म हासिल करो।' ईसाई मिशनरियों द्वारा पूरी दुनिया में शिक्षण संस्थान स्थापित कर शिक्षा के साथ धर्म-प्रचार का कार्य जगजाहिर है। शिक्षा को मानव समाज के विकास की धुरी माना गया है। विकास के सभी प्रयासों का लक्ष्य मनुष्य के जीवन स्तर में सुधार होता है और समाज के किसी भी क्षेत्र में विकास की रीढ़ शिक्षा ही होती है। इसके अलावा, शिक्षा के प्रत्यय पर प्राचीन काल से ही चिंतकों व विचारकों ने अलग-अलग विचार रखे हैं तथा अपने ढंग से इसे परिभाषित करने के प्रयास किए हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी ने शिक्षा की सबसे उपयुक्त परिभाषा देते हुए कहा था, शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के मन, शरीर और आत्मा के उच्चतम विकास से है। गांधी धर्म-मर्मज्ञ के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उनके अनुसार, बच्चे के शारीरिक विकास के लिए जैसे मां का दूध जरूरी है, उसी तरह मनुष्य की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए शिक्षा आवश्यक है। वे साक्षरता और शिक्षा को बिल्कुल अलग मानते थे। उनके अनुसार, साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न प्रारंभ। यह केवल मनुष्य को शिक्षित बनाने का एक साधन है। उन्होंने शिक्षा से मनुष्य के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण का तात्पर्य दिया।

आज की हाईटेक दुनिया में किसी भी शक्तिशाली अर्थव्यवस्था के लिए शिक्षा को पूर्वापेक्षित माना गया है। राष्ट्रीय एवं वैश्विक विमर्श में शिक्षा को सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति की बुनियाद माना गया है। यूनेस्को, विश्व बैंक, एशियन डेवलपमेंट बैंक आदि द्वारा मिलकर गठित वर्ल्ड एजुकेशन फोरम पूरी दुनिया में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अध्ययन एवं योजना बनाने का काम करता है। इसके द्वारा शिक्षा सभी के लिए (एजुकेशन फॉर ऑल) का नारा दिया गया एवं इस हेतु संगठित रूप से अभियान चलाया गया। इन सबके साथ भारत में शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने वाला कानून बना एवं केंद्र तथा बिहार सहित अन्य राज्य सरकारों ने शिक्षा के सार्वजनीकरण पर जोर दिया। अभियान चलाकर यह सुनिश्चत करने की कोशिश की गई कि कोई भी स्कूल जाने की उम्र वाला बच्चा स्कूल से बाहर न छूटे। इसमें कोई शक नहीं कि ये सारे प्रयास बहुत हद तक सफल रहे हैं, जिसके कारण ग्रामीण इलाकों में भी साक्षरता दर बढ़ी है। हालांकि, कोरोना के बढ़ते संक्रमण के दौर में शिक्षा-व्यवस्था ही सबसे अधिक प्रभावित हो रही है। इस मुकाम पर पहुंचकर हम यह सोचने को विवश हैं कि जो कुछ भी हो रहा है, वह सिर्फ साक्षरता है या लोग वास्तविक अर्थों में शिक्षित हो रहे हैं। उनके अनुसार शिक्षा का मकसद तो चरित्र-निर्माण व गुणवत्तापूर्ण जीवन है और मनुष्य के गुणवत्तापूर्ण जीवन की कल्पना सामाजिक परिवेश से अलग नहीं की जा सकती है।

> "वर्तमान व सामाजिक मान्यता में शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण की जगह शिक्षित व्यक्ति की सफलता का पैमाना उसके धनोपार्जन की क्षमता से जोड़ दी गई है।"

हमारी मान्यता रही है कि व्यक्ति और समाज में अन्योन्याश्रय संबंध है। फिर शिक्षा तो इन दोनों के रिश्ते को मजबूत करने वाली होनी चाहिए, परंतु इसके विपरीत कभी-कभी शिक्षित व्यक्ति समाज से अपने को अलग-थलग महसूस कराने लगता है। ऐसी शिक्षा अपूर्ण ही मानी जाएगी, क्योंकि यह समाज के ताने-बाने को जर्जर बनाती है। लोक प्रचलन में आज यह मान्यता जड़ पकड़ रही है कि समाज में जिसके पास अधिक साधन होंगे, वही अधिक प्रतिष्ठा का हकदार होगा। दूसरी तरफ, सफलता व उपलब्धियों की खुशी में अधिक सूझबूझ से सामाजिकता निभाने की भावना व परंपरा कमजोर पड़ती जा रही है। सामाजिकता और नैतिकता के बिना गुणवत्तापूर्ण जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

वर्तमान व सामाजिक मान्यता में शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण की जगह शिक्षित व्यक्ति की सफलता का पैमाना उसके धनोपार्जन की क्षमता से जोड़ दी गई है। जितनी मोटी आमदनी होती है, वह व्यक्ति सफलता की सीढ़ी पर उतना ही ऊंचा दिखता है। ऐसी प्रथा चल पड़ी है कि शिक्षा को अंधाधुंध धनोपार्जन का जरिया मान लिया गया है। धनोपार्जन के एक सूत्री कार्यक्रम के तहत व्यक्ति समाज की बात तो दूर, परिवार की चिंता भूल जाता है। तेज गति से अधिक से अधिक कमाने की होड़ में सामाजिकता पिछड़ती चली जा रही है। समाज एवं इंसान आगे बढ़ता दिख रहा है, लेकिन सामाजिकता और इंसानियत पिछड़ती जा रही है। सोच और मकसद दूषित हो जाने से शिक्षा के मूल अभिप्राय का क्षरण हो रहा है व सामाजिकता भौतिकता के आगे घुटने टेक रही है। यहां चौंकाने वाली बात समाज द्वारा इस प्रवृत्ति की सहज स्वीकार्यता है। जिस सोच के तहत समाज के बुनियाद पर आघात हो रहा है व इसके स्वरूप को विकृत किया जा रहा है, उसके प्रति समाज गाफिल दिखता है। समय आ गया है, समाज की संरचना को क्षत-विक्षत करने वाली इस मानसिकता से हमें बाहर निकलना पड़ेगा। अनुचित धनोपार्जन तभी तक बुरा लगता है, जब तक हमें मौका नहीं मिलता। स्वयं इससे लाभान्वित होने की स्थिति में सारे आदर्श धरे रह जाते हैं। शिक्षा के उद्देश्य को पवित्र रखने के लिए इस दोहरी मानसिकता से समाज को बाहर निकलना होगा। शिक्षा को प्रभावी एवं उपयोगी बनाने के लिए पहल करना सरकार का दायित्व तो है ही, साथ-साथ समाज की भी अहम भूमिका है। सामाजिकता, नैतिकता एवं राष्ट्रीयता के मूल्यों का विद्यालयी पाठ्यक्रम के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक मान्यताओं में समाहृत करना होगा। समाज को अपने मूल्य-प्रणाली (वैल्यू सिस्टम) में अपेक्षित परिवर्तन लाना होगा। अधिकतम धनोपार्जन करने वाले को सफलतम मानने की मानसिकता छोड़नी होगी। यह समझना होगा कि हमारी सफलताओं और उपलब्धियों में समाज तथा सरकार की भी अपनी भूमिका रहती है। शिक्षित मनुष्य को देखना होगा कि वह समाज के लिए क्या कर रहा है? शिक्षित व्यक्ति को अपनी अलग पहचान बनाने की प्रवृत्ति छोड़कर समाज में अपनी उपयोगिता व प्रासंगिकता बनानी होगी। अपने सार्वजनिक योगदान व चारित्रिक धवलता को सामाजिक प्रतिष्ठा की कसौटी बनानी होगी। तभी हम एक मजबूत समाज और दीर्घकालिक सभ्यता का निर्माण कर सकते हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

पश्चिम बंगाल चुनाव

राष्ट्रीय राजनीति में ममता की भूमिका का प्रश्न

कृष्ण प्रताप सिंह

अब जब तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी ने अपने दावे के मुताबिक एक पैर से बंगाल जीत लिया है और कह रही हैं कि उनके बंगाल ने भारत को बचा लिया है, बहुत स्वाभाविक है कि उनके दो पैरों से दिल्ली जीतने के दावे पर चर्चाएं हों।

बहरहाल, आज की तारीख में उनके इस दावे से असहमति नहीं जताई जा सकती कि बंगाल की जनता ने भारत को बचा लिया है। क्योंकि अब किसी से भी छिपा नहीं कि अनेकता में एकता वाले भारत के विचार को बचाने की जरूरत है। इस चुनाव में वे जीत जाते तो निस्संदेह उस भारत के भविष्य को लेकर नये और ज्यादा गम्भीर अंदेशे पैदा होते। फिर भी उनकी जीत पर देश के गैरभाजपाई विपक्षी दलों, खासकर क्षत्रपों का गद?गद होना अस्वाभाविक नहीं लगता। जब भाजपा ने सहयोगियों को निगलकर अपना विस्तार करने की पुरानी आदत के अनुसार उनके गले पर दबाव बढ़ाया तो उन्होंने बहादुरीपूर्वक उसका मुकाबला किया और सिद्ध करके मानीं कि वह सेर है तो वे सवा सेर हैं। या कि बंगाल की शेरनी की उनकी पुरानी पहचान यों ही नहीं बनी है। मोदी से भिड़ा दिये जाने पर भी दैन्य या पलायन का विकल्प नहीं चुना। उन्होंने यह भी साबित किया कि 'महानायक' नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता और उनके सिपहसालार-ए-खास अमित शाह की 'चाणक्य नीति' उनकी राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस की कितनी भी दुर्दशा कर सकती हों, उनके जैसे क्षत्रपों को परास्त नहीं कर सकतीं।

बंगाल के साथ आये चार अन्य राज्यों के चुनाव नतीजे भी, एक के बाद एक शिकस्तों से त्रस्त गैरकांग्रेसी विपक्षी दलों के लिए सुकून की खबरें लाये हैं। इस कदर कि भाजपा असम व पुडुचेरी में अपनी जीत का जश्न भी नहीं मना पा रही। केरल में वामदलों ने अपनी सत्ता बचाकर इतिहास रच डाला है तो तमिलनाडु में द्रमुक ने अन्नाद्रमुक व भाजपा के गठबंधन की कलाइयां मरोड़कर उससे सत्ता छीन ली है। निश्चित ही इससे उन राज्यों के क्षत्रपों को मनोवैज्ञानिक बढ़त मिलेगी, जहां निकट भविष्य में विधानसभा चुनाव होने हैं।

इसलिए यहां एक पल रुककर क्षत्रपों के अतीत व वर्तमान के आईने को सामने करें तो ममता से कोई नयी उम्मीद पालने से पहले थोड़ा वस्तुनिष्ठ हो जाने की जरूरत की उपेक्षा नहीं कर सकते। यकीनन, पिछले वर्षों में कांग्रेस के 'आत्मसमर्पण' के बाद इन क्षत्रपों की महत्वाकांक्षाएं और मौकापरस्ती ही भाजपा व नरेन्द्र सरकार के विश्वसनीय राष्ट्रीय विकल्प के निर्माण के सबसे ज्यादा आड़े आती रही हैं। मिसाल के तौर पर 2019 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव, मायावती व अजित सिंह का गठबंधन भाजपा को नहीं हरा पाया तो वे अलग-अलग होकर अपने-अपने खोल में दुबक गए और मायावती ने यहां तक घोषणा कर दी कि 2022 का विधानसभा चुनाव वे अकेले ही लड़ेंगी। क्षत्रपों के प्रभुत्व वाले दूसरे राज्यों में भी इस तरह की नजीरों की कमी नहीं है। ऐसे में उनके द्वारा किसी नये विकल्प का निर्माण कर उसमें लोगों का भरोसा कैसे जमाया जा सकता है?

इसलिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या ममता आगे चलकर दूसरे क्षत्रपों से अलग सिद्ध होंगी? ठीक है कि वे बंगाल में बेहतर रणनीति अपनाकर अपनी पार्टी को जिता ले गई हैं और पूर्वोत्तर के द्वार बंगाल को भाजपा के लिए अभेद्य लौहदुर्ग में बदल देने का सारा श्रेय उन्हें ही जाता है। इतना ही नहीं, इससे राष्ट्रीय राजनीति में जो आलोड़न पैदा होगा, वह भाजपा की चिन्ताएं जरूर बढ़ायेगा। लेकिन अपने राज्य में भाजपा की अस्मिता व साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति का मुकाबला करते हुए उन्होंने जिस तरह बंगाल की बेटी की अपनी छवि गढ़ी, 'बाहरी' का सवाल उठाया और जवाबी ध्रुवीकरण कराया, यहां तक कि चाणक्य नीति बरतकर वाम दलों के गठबंधन की घटक कांग्रेस से खुद को वाकओवर दिलाया, वह राष्ट्रीय राजनीति में उनकी सक्रियताओं व संभावनाओं के बहुत माफिक नहीं बैठने वाला। क्षत्रपों के बारे में इस पुरानी धारणा को भी वे शायद ही तोड़ पायें कि उन्हें अपने राज्यों के या अपने संकीर्ण राजनीतिक हित ही सर्वोपरि दिखते हैं और वे राष्ट्रीय मुद्दों पर तर्कसंगत दृष्टिकोण नहीं अपना पाते।

मुद्दा

सुनी जाए पूनावाला की आवाज

चंदन कु. चौधरी

सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अदार पूनावाला ने लंदन के अखबार 'द टाइम्स' के साथ बातचीत में कहा था कि कोविशील्ड वैक्सीन की आपूतत की मांग को लेकर भारत के सबसे शक्तिशाली लोगों में से कुछ ने उनसे फोन पर उग्रतापूर्वक बातें कीं। इस दबाव के चलते ही वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ लंदन चले आएहैं। पूनावाला की बातों से स्पष्ट है कि वैक्सीन के लिए देश के ताकतवर लोग उन्हें धमका रहे थे। ऐसे समय में जब देश कोरोना महामारी के सबसे गंभीर संकट का सामना कर रहा हैग वैसे समय में पूनावाला को धमकी दिए जाने संबंधी खबर निश्चित रूप से विचलित करने वाली है। एसआईआई भारत में ऑक्सफोर्ड/एस्ट्रोजेनेका की कोविड-19 वैक्सीन कोविशील्ड वैक्सीन का उत्पादन कर रही है, और यह सर्वविदित तथ्य है कि कोरोना संकट के समय वैक्सीन ही एकमात्र उम्मीद बन कर सामने आई है। ऐसे में होना तो यह चाहिए था कि अदार पूनावाला को पूरी तरह से सुरक्षा मुहैया कराई जाती और उन्हें सभी सुविधाएं मुहैया कराई जातीं जिससे वह अपना काम बेहतर तरीके से कर सकते। इससे अधिक से अधिक वैक्सीन का उत्पादन होता और लोगों को अधिक से अधिक लाभ मिलता। यह ऐसा समय है जब महामारी से लड़ रहे या उसके लिए काम कर रहे किसी भी व्यक्ति का मनोबल ऊंचा बनाए रखने की जरूरत हैग उसे तोड़ने की नहीं।

दुनिया के अन्य देशों से कभी भी और कहीं से भी ऐसी कोई खबर सामने नहीं आई जिसमें वैक्सीन बनाने वालों को निशाना बनाए जाने की बात कही गई हो। बल्कि ऐसे लोगों का मनोबल बना कर रखने की बात सामने आई है। हालांकि हमारे देश में इसका उल्टा हो रहा है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि आखिर, वो कौन लोग हैं, जो पूनावाला को धमकी दे रहे हैंग जिसके कारण उन्हें देश छोड़ कर लंदन जाने के लिए मजबूर होना पड़ा? क्या वे इतने शक्तिशाली हो गए हैं? क्या उन्हें किसी बात का डर नहीं लगता? क्या उनका चेहरा बेनकाब नहीं होना चाहिए?

निश्चित तौर पर होना चाहिए। सरकार और प्रशासन को चाहिए कि वे इस मामले की गंभीरता को समझें और ऐसे लोगों की पहचान कर उन पर कार्रवाई करें। कुछ राजनीतिक दलों ने पूनावाला को धमकी दिए जाने की घटना की जांच की मांग भी की है। हालांकिग यह अच्छी बात है कि पूनावाला ने कहा है कि वह आगामी दिनों में जल्द ही भारत लौटेंगे।

कहना न होगा कि इस समय सभी लोगों की एकमात्र उम्मीद वैक्सीन ही है। बेशकग सरकार और प्रशासन पर दबाव है कि वे जल्द से जल्द अधिक से अधिक लोगों को कोरोना वायरस का टीकाकरण करें। हालांकि हमें, समझना होगा कि टीका बनाने की अपनी एक प्रक्रिया होती हैग और इसमें जल्दीबाजी नहीं की जा सकती। वैक्सीन बनाना एक स्पेशलाइज्ड़ प्रोसेस हैग और इसलिए रातोंरात उत्पादन बढ़ाना संभव नहीं है। साथ हीग हमें यह भी समझने की जरूरत है कि भारत की आबादी बहुत अधिक है, और सभी वयस्क आबादी के लिए वैक्सीन बनाना आसान काम नहीं है। यह अपने निर्धारित समय के अनुसार ही तैयार हो सकती हैग और ऐसे में हड़बड़ी में गड़बड़ी नहीं की जा सकती है।

दूसरी बात हमें यह समझना होगी कि हमारे देश में जमाखोरी और मुनाफाखोरी की बुरी समस्याएं हैं। कोरोना के भीषण संकट के समय में भी लगातार ऐसी खबरें सामने आ रही हैं, जिनमें जमाखोरी और मुनाफाखोरी की बात कही जाती है। लोग दवा और जीवन रक्षक ऑक्सीजन की कालाबाजारी के काम में लगे हुए हैं, जो कहीं से भी उचित नहीं हैग और गैरकानूनी भी हैं। ऐसे में लगता है कि जिन लोगों ने पूनावाला को धमकी दी होगीग वैक्सीन को लेकर उनकी भी मंशा ठीक नहीं होगी। इस घटना को देखते हुए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए और ऐसे काम में लगे लोगों का मनोबल बनाए रखने के लिए आवश्यक प्रयास करने चाहिए। हालांकिग पुनावाला ने कहा है कि हम पिछले साल अप्रैल से सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हमें सरकार की तरफ से हर तरह का सहयोग मिला हैग चाहे वह साइंटिफिक होग रेग्युलेटरी हो या फाइनेंशियल हो।

दरअसल, यह समय राजनीति का नहीं है। यह घोर संकट का समय है। ऐसे में सभी लोगों को मिल कर काम करना चाहिए और देश को कोरोना संकट से बाहर निकाल कर लाना चाहिए।

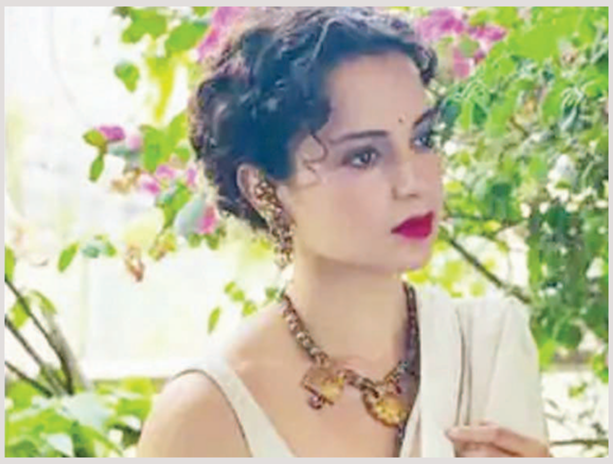

अलाया ने कंगना रनौत के लिए चुना चापलूसी शब्द, जानें सारा- कार्तिक और आलिया के लिए क्या कहा

फिल्म जवानी जानेमन से बॉलीवुड डेब्यू करने वालीं अभिनेत्री अलाया एफ सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। अलाया का क्यूट अंदाज और बोल्ड अवतार फैन्स को काफी भाता है। वहीं अलाया भी अक्सर अपने सोशल मीडिया पोस्ट्स के चलते सुर्खियों में रहती हैं। हालांकि इस बार अलाया अपने एक बयान को लेकर चर्चा में हैं।

आलिया भट्ट की तारीफ – अलाया एफ हाल ही में जूम टीवी के एक शो में शामिल हुईं। इस दौरान अलाया ने आलिया भट्ट की जमकर तारीफ की और कहा, उफ्फ... वो कमाल की हैं। मैंने गंगूबाई काठियावाड़ी का ट्रेलर जाने कितनी बार देखा है। जब भी मैं कोई बुरा ट्रेलर देखती हूं तो उसके बाद मूड को रिफ्रेश करने के लिए गंगूबाई काठियावाड़ी का ट्रेलर देख लेती हूं।

- **सारा और कार्तिक के लिए शब्द** – शो में अलाया को कुछ सितारों के नाम दिए गए और उनके लिए जो भी शब्द तुरंत दिमाग में आता है वो कहने के लिए कहा गया। ऐसे में अलाया ने सारा अली खान के लिए नमस्ते का एक्शन करते हुए कलचर्ड शब्द कहा, तो वहीं कार्तिक आर्यन के लिए धमाका। वैसे बता दें कि कार्तिक जल्दी ही इस नाम की एक फिल्म में भी नजर आएंगे।
- **कंगना के लिए चुना चापलूस शब्द** – सारा और कार्तिक के बाद जब कंगना रनौत का नाम लिया गया तो अलाया ने चापलूसी शब्द का इस्तेमाल कहते हुए कहा, ये शब्द उनके लिए नहीं है, लेकिन ये मेरे दिमाग में आया क्योंकि वो अक्सर इस शब्द का इस्तेमाल करती हैं। बता दें कि कंगना रनौत के वीडियोज से लेकर सोशल मीडिया पोस्ट्स तक में वो कई बार चापलूस और चापलूसी शब्द का इस्तेमाल कर चुकी हैं। कुछ वक्त पहले उन्होंने ये शब्द अपने एक ट्वीट में स्वरा भास्कर के लिए भी लिखा था।

अबॉर्शन और सुसाइड की फेक न्यूज पर इलियाना डिक्रूज ने किया रिएक्ट, कहा- बुरा लगा कि लोग..

बॉलीवुड की खूबसूरत एक्ट्रेस इलियाना डिक्रूज का नाम उन अभिनेत्रियों की लिस्ट में शुमार है, जिन्होंने चाहें कम फिल्मों में काम किया हो, लेकिन अपनी अदाकारी से सभी का हर बार दिल जीता है। इलियाना डिक्रूज अक्सर अपने सोशल मीडिया पोस्ट्स के लेकर भी चर्चा में रहती हैं, हालांकि इस बार इलियाना उनके बारे में फैलीं फेक न्यूज पर अपनी बात रखी है।

अबॉर्शन की खबर सुन हंसी थीं इलियाना

दरअसल हाल ही में इलियाना से बॉलीवुड हंगामा ने खास बातचीत की, जिसमें पूछा गया कि क्या कभी कोई ऐसी फेक न्यूज रही है, जिसको सुनकर आप खूब हंसी हो। इस पर इलियाना ने कहा, वैसे तो कई रहीं, लेकिन एक थी जिसमें दावा किया गया था कि मैं प्रेग्नेंट हूं और अबॉर्शन करवाया है। मुझे ये देखकर काफी बुरा लगा कि लोग ऐसी बातें लोग सच में किसी के बारे में करते हैं। ये बहुत अजीब है।

सुसाइड की खबरों पर दिया रिएक्शन

इंटरव्यू में आगे इलियाना ने सुसाइड की एक फेक न्यूज पर भी रिएक्शन दिया। इलियाना ने कहा, अबॉर्शन के अलावा एक और खबर थी, जिसमें कहा गया था कि मैंने सुसाइड की कोशिश नहीं की है, बल्कि मैंने आत्महत्या कर ली है। इसके अलावा सबसे बड़े दुख की बात है कि रिपोर्ट में कहा गया था कि मैंने आत्महत्या की और मैं बच गई और मेरी मेड ने इस बात की पुष्टि भी की है। जबकि हकीकत तो है कि न मैंने आत्महत्या की कोशिश तक की, न मेरे घर में मेड है, मैं जिंदा हूं... इस सब का कोई मतलब ही नहीं था। मुझे समझ नहीं आता कि उन्हें इस तरह का मसाला कहां से मलिता है।

इलियाना का फिल्मी करियर

बता दें कि इलियाना ने साल 2012 में फिल्म बर्फी से बॉलीवुड डेब्यू किया था। फिल्म में इलियाना के साथ रणबीर कपूर और प्रियंका चोपड़ा नजर आए थे। इसके अलावा फिल्म फटा पोस्टर निकला हीरो, मैं तेरा हीरो, पागलपंती और रुस्तम सहित कई फिल्मों में अपना दम दिखा चुकी हैं। वहीं हाल ही में फिल्म द बिग बुल से डिजिटल डेब्यू किया है। फिल्म में अभिषेक बच्चन मुख्य भूमिका में थे। द बिग बुल पहले थिएटर्स में रिलीज होनी थी, लेकिन कोविड के चलते ओटीटी पर रिलीज हुई।

नोरा फतेही का फनी अंदाज आया फैन्स को पसंद, वीडियो हुआ वायरल

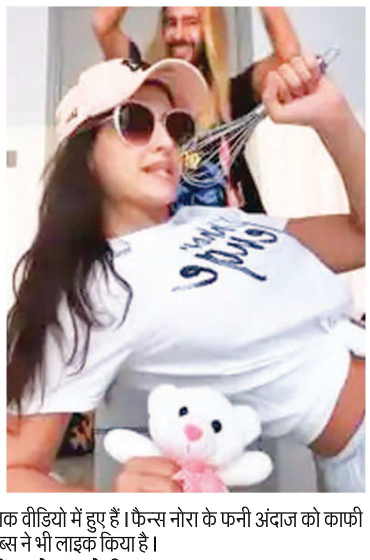

नोरा फतेही की गिनती बॉलीवुड के बेस्ट डांसर्स में होती है। नोरा न सिर्फ अपने दमदार डांस बल्कि अपनी बोल्ड अदाएं और क्यूट अंदाज से सभी का दिल जीत लेती हैं। नोरा सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं। इस बीच नोरा का एक फनी वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है।

नोरा का फनी वीडियो वायरल

नोरा फतेही ने कुछ देर पहले ही इंस्टाग्राम पर एक फनी वीडियो शेयर किया है। नोरा के वीडियो को फैन्स काफी पसंद कर रहे हैं। वीडियो में नोरा एक गाने पर फनी एक्सप्रेशन्स देती नजर आ रही हैं। वहीं वीडियो में नोरा के साथ भी नजर आ रहे हैं।

फैन्स को पसंद आ रहा है वीडियो

नोरा ने वीडियो को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, बुकिंग्स के लिए मौजूद, लॉकडाउन को हाइप अप करने के लिए... हैप्पी संडे। नोरा फतेही के वीडियो पर ढाई लाख से अधिक लाइक्स आ चुके हैं। वहीं करीब 2 कमेंट्स अभी तक वीडियो में हुए हैं। फैन्स नोरा के फनी अंदाज को काफी पसंद कर रहे हैं। नोरा के इस वीडियो को कई सेलेब्स ने भी लाइक किया है।

हिट मशीन नोरा फतेही

गौरतलब है कि नोरा ने कई डांस वीडियोज में अपना दम दिखाया है। बैक टू बैक हिट सॉन्ग्स देने के चलते नोरा को हिट मशीन भी कहा जाता है। वहीं बता दें कि अपने डांस के साथ ही नोरा बतौर अभिनेत्री भी अपना दम दिखा चुकी हैं। नोरा, वरुण धवन और श्रद्धा कपूर के साथ स्ट्रीट डांसर, सलमान खान के साथ भारत में नजर आ चुकी हैं। इसके साथ ही नोरा जल्दी ही अजय देवगन की फिल्म भुज- द प्राइड ऑफ इंडिया में भी नजर आएंगे।

दोस्ताना 2 में दिखेगा नया चेहरा

कार्तिक आर्यन के बाहर होने के बाद करण जौहर ने लिया फैसला?

इन दिनों बॉलीवुड की कई बड़ी फिल्मों को लेकर इन दिनों जबरदस्त चर्चाएं हैं। इस बीच करण जौहर की आने वाली एक फिल्म सुर्खियों में आ गई है। हम बात कर रहे हैं दोस्ताना 2 की, पहले इसमें कार्तिक आर्यन नजर आने वाले थे लेकिन बीते दिनों ही ऐसी खबरें आईं थीं कि इस फिल्म से कार्तिक को बाहर कर दिया गया है। इसके बाद सोशल मीडिया पर बड़ा विवाद खड़ा हो गया, करण जौहर पर एक बार फिर से नेपोटिज्म के आरोप लगने लगे। वहीं, अब मीडिया रिपोर्ट्स में बताया जा रहा है कि कॉन्ट्रोवर्सीज से बचने के लिए करण ने एक तरीका निकाल लिया है।

मीटिंग्स में हुा कास्टिंग पर फैसला

कार्तिक आर्यन के फिल्म से बाहर होने के बाद दोस्ताना 2 के लिए अक्षय कुमार, राजकुमार राव, वरुण धवन, सिद्धार्थ मल्होत्रा और सिद्धांत चतुर्वेदी जैसे कई स्टार्स के नाम सामने आए। वहीं बॉलीवुड हंगामा की एक रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया कि फिल्म की कास्टिंग को लेकर करण ने अपनी क्रिएटिव टीम और डायरेक्टर के साथ कई मीटिंग्स की हैं। इस दौरान कई नाम रखे गए लेकिन करण जौहर अभिनेता अक्षय कुमार को लेने की लिए पूरी कोशिश में जुटे हुए हैं। सिर्फ यही नहीं करण जौहर ने एक और बड़ा फैसला लिया है।

नेपोटिज्म से बचने को

बताया जा रहा है कि इस फिल्म में करण, अक्षय कुमार के साथ एक आउट साइडर को लेना चाहते हैं। जिसके जरिए वो इनसाइडर और आउटसाइडर की बहस के बीच नेपोटिज्म को हवा देने से बच सकें। बताया जा रहा है कि इसके लिए 5 नामों को शॉर्टलिस्ट किया गया है, इनमें से 4 आउटसाइडर हैं। हालांकि, अभी इसे लेकर कोई आधिकारिक ऐलान नहीं किया गया है, ऐसे में हिन्दुस्तान की ओर से ऐसी किसी खबरों की पुष्टि नहीं की जा सकती है।

ऐसी होगी कहानी

बताया जा रहा है कि धर्मा के द्वारा लॉकडाउन खुलने के बाद ही आगे का फैसला लिया जाएगा। फिल्म में जाह्नवी कपूर और डेब्यूटेंट लक्ष्य लीड रोल में होंगे। जो भी नई कास्टिंग होगी वो जाह्नवी के भाई के लिए होगी। खबरें हैं कि फिल्म की कहानी में देखने को मिलेगा कि भाई और बहन एक ही लड़के के प्यार में पड़ जाएंगे।

अलाया एफ को भी मिली थी कॉस्मेटिक सर्जरी कराने की सलाह, जानें अभिनेत्री ने क्या लिया फैसला

बॉलीवुड अभिनेत्रियों के लिए कॉस्मेटिक सर्जरी कोई नई बात नहीं है। इनमें से कुछ अभिनेत्रियां ने इस पर खुलकर बात की तो वहीं कई ने इससे इनकार कर दिया। पिछले साल बॉलीवुड में डेब्यू करने वालीं अलाया एफ को भी सर्जरी कराने की सलाह मिली थी। उन्होंने एक इंटरव्यू में इसका खुलासा किया है।

नाक की सर्जरी की मिली थी सलाह

जूम टीवी से बात करते हुए अलाया कहती हैं कि 'हां, मुझे भी ये सलाह दी गई। मुझसे ऐसा कहा गया, लेकिन मैंने ये नहीं किया। मुझे लगता है कि हर कोई सोचता है, मुझे ये करना चाहिए। यह एक बहुत छोटी सी चीज है। मुझे तो ये भी नहीं पता कि लोग इसे देख पाते हैं। मेरी नाक का ये हिस्सा (दाहिनी ओ) सही है, इस साइड (बाईं ओर) थोड़ा सा उभरा हुआ है। यह दुनिया की सबसे छोटी चीजों में से है।'

मायने नहीं रखता

अलाया ने आगे कहा कि 'मैं शायद यह कभी नहीं करूंगी क्योंकि इसका कोई प्वॉइंट नहीं है।' अलाया यह भी बताती हैं कि ज्यादातर लोगों को यह पता भी नहीं चलता है।

पिछले साल किया था डेब्यू

अलाया ने बीते साल नितिन कक्कड़ की फिल्म 'जवानी जानेमन' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। फिल्म में वो सैफ अली खान की बेटी बनी होती हैं जो 21 साल की उम्र में प्रेग्नेंट हो जाती है। इसमें उनके अभिनय को काफी सराहा गया था।

शादी के लिए पैरेंट्स का नहीं दबाव

अलाया अभिनेत्री पूजा बेदी की बेटी हैं। पत्रकार राजीव मसंद के साथ एक इंटरव्यू में अलाया ने अपने पैरेंट्स के बारे में बात करते हुए कहा, एक ऐसे देश में जहां लोग अपने बच्चों पर शादी के लिए दबाव डालते हैं, वहीं मेरे पैरेंट्स पूरी तरह अलग हैं। उनका मानना है कि यदि आप 30 साल की उम्र से पहले शादी करते हैं तो जिंदगी की सबसे मूर्खतापूर्ण चीज करते हैं। आप करियर पर फोकस करो, काम पर फोकस करो और खुद को तैयार करने पर ध्यान दो। यही बात मुझे हमेशा सिखाई जाती है।

अर्जन बाजवा ने महामारी और बॉलीवुड की दुनिया पर इसके प्रभावों के बारे में की खास बातचीत

टैलेंटेड एक्टर अर्जन बाजवा, जिन्हें फैशन, रूस्तम, कबीर सिंह जैसी फिल्म्स के लिए जाना जाता है, ने हाल ही में साझा किया कि कैसे उनके करियर पर महामारी का प्रभाव पड़ा। हैंडसम एक्टर कई अन्य आकर्षक बॉलीवुड वेंचर्स में काम करने के लिए उत्सुक थे। हालांकि, वर्ष 2020 की शुरुआत से हमारे जीवन को प्रभावित करने वाली महामारी ने कई लोगों की पेशेवर और व्यक्तिगत योजनाओं को गंभीर रूप से बाधित कर दिया।

महामारी के कारण उत्पन्न हुई अनिश्चितता के बारे में बात करते हुए अर्जन कहते हैं, "कबीर सिंह के बाद, मुझे बहुत सारे काम ऑफर किए गए, लेकिन अनिश्चितता के कारण सभी एक तरह से रुक गए। प्रोजेक्ट्स और तारीखें आगे बढ़ती गईं। यह सब अच्छी तरह से योजनाबद्ध था, लेकिन धीरे-धीरे कुछ फिल्म्स तथा वेब शोज टलते गए और अन्य में भी देर होती चली गई। पिछले साल लॉकडाउन की शुरुआत में सौभाग्य से, मेरा डिजिटल प्रोजेक्ट जी 5 का स्टेट ऑफ सेज 26/11 रिलीज हुआ, जिसमें मैंने मुख्य किरदार का नेतृत्व किया था। इसलिए मुझे उम्मीद थी कि चीजें बहुत तेजी से आगे बढ़ेंगी, लेकिन फिर लॉकडाउन के कारण छह महीने की गुमनाम खामोशी के तले सब कुछ थम गया। एकमात्र सोने पर सुहागा वाली बात यह है कि मैंने उसके बाद एमेजॉन के लिए एक महान डिजिटल प्रोजेक्ट किया और मैं इसके लिए तत्पर हूँ।"

कबीर सिंह के अलावा, एक्टर उस वर्ष एक साउथ प्रोजेक्ट में भी नजर आए। अर्जन ने तेलुगु में एक्टिंग की शुरुआत की थी और तब से ही वे साउथ और हिंदी फिल्म्स के बीच अपने एक्टिंग करियर को बनाए हुए हैं। यद्यपि तेलुगु सिनेमा के दायरे की प्रशंसा करते हुए, अर्जन का मानना है कि क्षेत्रीय सिनेमा की तुलना में बॉलीवुड में बने रहना अधिक कठिन है। वे कहते हैं, "हिंदी फिल्म्स केवल एक राज्य तक सीमित नहीं हैं। पहुँच के मामले में बॉलीवुड एक बहुत बड़ी इंडस्ट्री है क्योंकि पूरी दुनिया में हिंदी फिल्म्स बड़े चाव से देखी जाती हैं। इसलिए, जब दांव इतने ऊँचे होते हैं, तो यहाँ बने रहने के लिए अपना रास्ता बनाना मुश्किल हो जाता है। यह कहने के बाद कि, जब यह दुनिया बड़ा बनाने के बारे में है, बहुत कुछ भाग्य पर भी निर्भर करता है। भाग्य इस खेल में एक बड़ी भूमिका निभाता है।"

20 साल बाद सिंगल सॉन्ग के साथ लौटीं सुनिधि चौहान, बोलीं-

स्टूडियो में पहला गाना गाने के बाद बुखार आ गया था

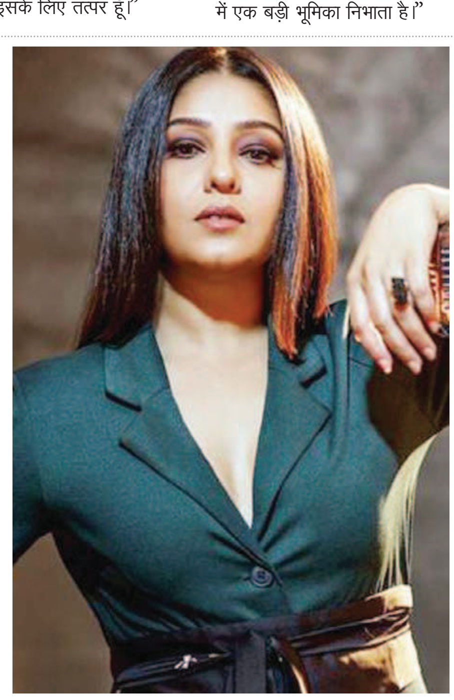

बीस साल बाद सुनिधि चौहान सोलो सिंगल सॉन्ग ये रंजिशें लेकर आई हैं। इस तरह आगे भी वे सिंगल लाने के प्रयास में हैं। सिंगल सहित उन्होंने पहली बार स्टूडियो में गाने का अनुभव, इंडस्ट्री में टेक्नोलॉजी से प्रभावित क्रिएटिविटी आदि पर खुलकर बात की। पढ़िए, बातचीत का प्रमुख अंश-

बीस साल बाद सोलो सिंगल, आखिर इतनी देर क्यों – सुनिधि- मैं चाहती तो नहीं थी कि इतनी देर हो, पर हो गई। बहुत सारी चीजें थीं, जिन्होंने मुझे बिजी रखा। लॉकडाउन में बहुत सारी जिंदगियां रुक गईं और काफी नुकसान भी हुआ। अपनी बात करूं तो खुद के लिए और यह समझने के लिए काफी वक्त मिला कि मुझे आगे और क्या-क्या करना है। कभी-कभी यह भी मन करता है कि ऐसा कुछ किया जाए। आर्ट में बोरियत न हो, इसलिए दूसरी नांव में पांव रखने का मन करता है। बस, वही हुआ। थैंक फुली, सही टाइम पर मेरी मुलाकात गौरवदास गुप्ता से हुई और उन्होंने म्यूजिक कंपोजर श्रुति राणे से मिलवाया। इस तरह ये रंजिशेंज रिकॉर्ड किया और वीडियो शूट करके सोशल मीडिया पर रिलीज किया गया। यह रोमांटिक गाना है, पर बहुत डेप्थ वाला गाना है। इसकी डीप मीनिंग है।

- **चार साल की उम्र से सिंगिग के चलते पढ़ाई भी 10वीं तक ही की। ऐसा नहीं लगता कि कहीं बचपन मिस किया हो** – सुनिधि- नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता, क्योंकि बचपन में जो कर रही थी, वह बहुत मन और खुशी से कर रही थी। हां, अगर कुछ ऐसा होता कि यह काम मुझे पसंद नहीं, तब शायद मुश्किल हो जाता। लेकिन जिस काम से मुझे सबसे ज्यादा प्यार है, वही कर रही थी, इसलिए मुझे नहीं लगता कि चाइल्डहुड में कहीं कुछ मिस किया है। मैंने म्यूजिक में स्कूल-कॉलेज से ज्यादा मजे किए हैं।
- **रुकी रुकी सी जिंदगी, धूम मचा ल, आजा नचल, बीड़ी जलइले जैसे हिट गाने दिए हैं। किसी रिकॉर्डिंग का किस्सा बताएंगी** – सुनिधि- मैंने बीड़ी जलइलेज गाना तब गाया था, जब 9-10 गाने एक साथ गा रही थी। सांस लेने का टाइम नहीं मिल रहा था और बैक टू बैक गाने रिकॉर्ड हो रहे थे। इसलिए कोई खास मेमोरी तो नहीं है, लेकिन ऐसा मेरे साथ बहुत कम होता है कि जब स्टूडियो में जाकर गाना सुनती हूं और लगता है कि यह गाना तो डेफिनेटली कमाल का चलेगा और लोगों को पसंद आएगा। यह मेरे साथ धूम को लेकर भी नहीं हुआ था। लेकिन बीड़ी जलइलेज सुनने के बाद स्टूडियो में ही मैंने कहा कि यह तो यह तो कुछ अलग ही होने वाला है। गुलजार साहब की लिखावट और उस वक्त का एकदम नया गाना था।

एलएंडटी देश भर के अस्पतालों को 22 ऑक्सीजन जनरेटर देगा

नई दिल्ली: अवसंरचना क्षेत्र की प्रमुख कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) ने बुधवार को कहा कि वह जल्द ही पूरे भारत में विभिन्न अस्पतालों को 22 ऑक्सीजन जनरेटर देगा, ताकि कोविड-19 महामारी के चलते पैदा हुई ऑक्सीजन की गंभीर कमी को दूर किया जा सके। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया, ''एलएंडटी जल्द ही भारत के ऐसे अस्पतालों में 22 ऑक्सीजन जनरेटर पहुंचाना शुरू कर देगा, जहां इनकी सबसे अधिक जरूरत है। ये इकाइयां हवा से मेडिकल ग्रेड की ऑक्सीजन तैयार करेंगी। एलएंडटी ने बताया कि इनमें से नौ उपकरणों की पहली खेप नौ मई तक भारत पहुंचेगी। कंपनी ने कहा कि इन्हें 15 मई से अस्पतालों को दिया जाएगा।

रॉयल एनफील्ड की ब्रिकी में 18 फीसदी की गिरावट

नई दिल्ली। रॉयल एनफील्ड ने अप्रैल 2021 की सेल्स रिपोर्ट जारी कर दी है। कंपनी ने बताया कि अप्रैल 2021 में उसके कुल 48,789 यूनिट्स की बिक्री हुई। जबकि, मार्च 2021 में रॉयल एनफील्ड के 60,173 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। यानी, मार्च 2021 की तुलना इस साल अप्रैल महीने में रॉयल एनफील्ड की बिक्री में 18 फीसदी की महीना दर महीना गिरावट दर्ज हुई है। अप्रैल में आई गिरावट का एक बड़ा कारण कोरोना की दूसरी लहर है। दरअसल, अप्रैल महीने के आखिरी 15 दिनों में देश के कई राज्यों में लॉकडाउन लागू था, जिसका असर कंपनी की बिक्री पर पड़ा है। इसकारण है कि मार्च महीने के मुकाबले अप्रैल महीने में कंपनी की बिक्री घटी है। पिछले साल पूरे देशभर में केंद्र सरकार ने लॉकडाउन किया है। इसकारण रॉयल एनफील्ड की एक भी बाइक की भारत में बिक्री नहीं हुई थी। हालांकि, पिछले साल अप्रैल महीने में कंपनी ने भारत से बाहर 91 यूनिट्स का निर्यात किया था। मार्च 2021 की तुलना में अप्रैल 2021 में रॉयल एनफील्ड के निर्यात में 19.3 फीसदी की महीना दर महीना बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया ने अप्रैल 2021 में सेल में बढ़ोत्तरी दर्ज की

नई दिल्ली। सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया ने अप्रैल 2021 की सेल्स रिपोर्ट जारी की है। कंपनी ने बताया कि अप्रैल 2021 में उसके कुल (घरेलू+निर्यात) 77,849 दोपहिया वाहनों की बिक्री हुई। जबकि, मार्च 2021 में सुजुकी के कुल 69,942 दोपहिया वाहनों की बिक्री हुई थी। यानी, मार्च 2021 के मुकाबले अप्रैल 2021 में कंपनी की कुल बिक्री में 11.3 फीसदी की महीना दर महीना बढ़ोतरी दर्ज की गई। यहां ध्यान देना जरूरी है पिछले साल अप्रैल महीने में कोविड-19 महामारी के कारण पूरे देशभर में लॉकडाउन लगा दिया था,इसकारण सुजुकी के एक भी दोपहिया वाहनों की बिक्री नहीं हुई थी। इसके अलावा कंपनी के प्रोडक्शन पर भी इसका बुरा असर पड़ा था। मार्च 2021 के मुकाबले अप्रैल 2021 में बिक्री में आई बढ़त इसकारण भी खास है, क्योंकि अप्रैल के आखिरी 15 दिनों में कोरोना की दूसरी लहर से बिक्री पर असर पड़ा है। दरअसल, पिछले महीने कई राज्यों में लॉकडाउन लगाया गया, जो अभी भी जारी है। इससे कंपनी की बिक्री पर भी असर पड़ा है।

कोरोना की दूसरी लहर के कारण अप्रैल में व्यापार को हुआ 6.25 लाख करोड़ का नुकसान

बिजनेस डेस्क: कोरोना का दूसरी लहर देश की अर्थव्यवस्था के लिए बेहद कठिन रहा है। कोरोना की वजह से घरेलू व्यापार को अप्रैल में 6.25 लाख करोड़ का नुकसान हुआ है। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) ने यह दावा किया है। वहीं कैट ने कहा है कि केंद्र और राज्य सरकारों को भी इस दौरान लगभग 75 हजार करोड़ के राजस्व के नुकसान की आशंका है।

6.25 लाख करोड़ का नुकसान

कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी सी भरतिया और राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा कि अप्रैल में भारत में 52926 लोगों की मौत कोरोना से हुई। दोनों व्यापारी नेताओं ने कहा कि पिछले महीने में देश के कुल घरेलू कारोबार में लगभग 6.25 लाख करोड़ का नुकसान हुआ है, जिसमें खुदरा व्यापार को 4.25 लाख करोड़ जबकि थोक व्यापार को लगभग 2 लाख करोड़ रुपए के नुकसान की आशंका है।

कोरोना को लेकर उठाएं सख्त कदम

खंडेलवाल ने कहा कि व्यापारिक नुकसान के आंकड़े न केवल देश की अर्थव्यवस्था को कमजोर बना रहे हैं, बल्कि घरेलू व्यापार की दुर्दशा की तरफ भी इशारा कर रहे हैं लेकिन इसके लिए कोरोना से मौत के आंकड़ों की अनदेखी नहीं नहीं की जा सकती। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए मानव

संसाधन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि कोरोना के आंकड़े तेजी से बढ़ते जा रहे हैं, जिस पर तुरंत लगाम नहीं लगाई गई तो भविष्य में और मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। इसे रोकने के लिए उन्होंने सख्त कदम उठाने की मांग की।

मैक्रोटेक डेवलपर्स की बुकिंग बिक्री चौथी तिमाही में 72प्रतिशत बढ़कर 2,013 करोड़ रुपए हुई

नई दिल्ली: रियल्टी कंपनी मैक्रोटेक डेवलपर्स ने बताया कि बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही के दौरान उसकी बुकिंग 72 प्रतिशत बढ़कर 2,013 करोड़ रुपए हो गई और इस दौरान कंपनी ने अपने कर्ज में 544 करोड़ रुपए की कटौती की। इससे एक साल पहले की समान अवधि में उसकी बुकिंग बिक्री 1,172 करोड़ रुपए थी। मैक्रोटेक डेवलपर्स, जिसे पहले लोढ़ा डेवलपर्स के रूप में जाना जाता था, ने शेयर बाजार को बताया कि उसकी बुकिंग बिक्री में 57 प्रतिशत योगदान मध्य-आय और किफायती आवास खंड का है। कंपनी ने बताया, ÷जोरदार परिचालन लागत के चलते हमारे संचयी शुद्ध ऋण में 544 करोड़ रुपए की कमी हुई।%% हालांकि, कंपनी ने यह नहीं बताया कि उसके ऊपर कुल कितना कर्ज है। साथ ही वित्त वर्ष 2020-21 के लिए बिक्री बुकिंग की संख्या का खुलासा भी नहीं किया।

स्पाइसजेट की मालवाहक इकाई ने बीजिंग से 3,100 ऑक्सीजन कन्संट्रेटर की ढुलाई की

मुंबई: बजट विमान सेवा स्पाइसजेट की मालवाहक इकाई स्पाइस एक्सप्रेस ने बुधवार को भारत के लिए बीजिंग से 3,100 ऑक्सीजन कन्संट्रेटर यंत्रों की खेप के साथ उड़ानें भरी। कंपनी की विज्ञप्ति के अनुसार इस काम में उसके दो विशाल विमान-बी767 और ए330 लगाए गए। पहली खेप नई दिल्ली में सुबह नौ बजकर 10 मिनट पर पहुंची जबकि दूसरी खेप दोपहर में आने वाली थी। एयरलाइन पिछले दो हफ्ते में अमेरिकी, हांगकांग, सिंगापुर और चीन से 9,950 से ज्यादा ऑक्सीजन कन्संट्रेटर की ढुलाई कर चुकी है। स्पाइसजेट के चैयरमैन और प्रबंध निदेशक अजय सिंह ने हाल में कहा था कि उनकी कंपनी का आने वाले दिनों में दुनिया भर से करीब 20,000 ऑक्सीजन कन्संट्रेटर की ढुलाई करने का लक्ष्य है ताकि देश में चिकित्सीय ऑक्सीजन की भारी कमी के संकट से निपटा जा सके। स्पाइसहेल्थ और दूसरे संगठनों ने इन ऑक्सीजन कन्संट्रेटर के लिए ऑर्डर दिए थे। स्पाइसएक्सप्रेस के बेड़े में 19 मालवाहक विमान है। इसके कार्गो सेवा नेटवर्क में 63 घरेलू और 50 अंतराष्ट्रीय शहर जुड़े हैं।

RBI की घोषणा से सेंसेक्स 424 अंक उछला, वित्तीय कंपनियों के शेयर चमके

मुंबई:

शेयर बाजार में पिछले तीन दिनों से जारी गिरावट पर बुधवार को विराम लगा और बीएसई सेंसेक्स 424 अंक उछलकर बंद हुआ। कोविड-19 चुनौतियों का सामना कर रही अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए आरबीआई की तरफ से किए गए उपायों की घोषणा से वित्तीय कंपनियों के शेयरों में तेजी के साथ बाजार में मजबूती आई। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 424.04 अंक यानी 0.88 प्रतिशत उछलकर 48,677.55 अंक पर बंद हुआ। इसी प्रकार, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 121.35 अंक यानी 0.84 प्रतिशत की बढ़त के साथ 14,617.85 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स के शेयरों में करीब 6 प्रतिशत बढ़त के साथ सर्वाधिक लाभ में सन फार्मा रही। इसके अलावा कोटक बैंक, एक्सिस बैंक, इंडसइंड बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, डा. रेड्डीज, टाइटन और टीसीएस में भी तेजी रही। दूसरी तरफ गिरावट दर्ज करने वाले शेयरों में बजाज फाइनेंस, एशियन पेंट्स और एचयूएल शामिल हैं। रिलायंस सिक्योरिटीज के रणनीति प्रमुख विनोद मोदी ने कहा, ÷मुख्य रूप से

वित्तीय, आईटी तथा दवा कंपनियों के शेयरों में तेजी से घरेलू शेयर बाजार को समर्थन मिला। कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने में अर्थव्यवस्था को समर्थन देने के लिए आरबीआई द्वारा उपायों की घोषणा से बाजार में तेजी आई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बुधवार को कुछ व्यक्तिगत तथा छोटे कर्जदारों को कर्ज चुकाने के लिए अधिक समय देने के साथ ही बैंकों से कहा कि वे वैक्सीन निर्माताओं, अस्पतालों और कोविड से संबंधित स्वास्थ्य ढांचे को प्राथमिकता के आधार पर ऋण दें। दैनिक उपयोग का सामान बनाने वाली कंपनियों को छोड़कर ज्यादातर प्रमुख खंडवार सूचकांकों में तेजी रही। मोदी के अनुसार कई राज्यों में कोरोना संक्रमण के मामले तथा उससे मृतकों की संख्या में वृद्धि चिंता का कारण है। हालांकि महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात समेत कई राज्यों में मामलों में कमी आई है, जो राहत की बात है। एशिया के अन्य बाजारों में हांगकांग में गिरावट रही जबकि सोल, शंघाई और तोक्यो बाजार अवकाश के कारण बंद रहे। यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरूआती कारोबार में गिरावट का रुख रहा। इस बीच, अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1.34 प्रतिशत की बढ़त के साथ 69.80 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

टेलीकॉम मंत्रालय ने 5G ट्रायल्स को दी मंजूरी, चाइनीज टेक्नोलॉजी की नो एंट्री

बिजनेस डेस्क:

दूरसंचार विभाग ने मंगलवार को 5जी परीक्षण के लिए दूरसंचार कंपनियों के आवेदनों को मंजूरी दे दी। हालांकि, इसमें कोई भी कंपनी चीनी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल नहीं कर रही है। दूरसंचार विभाग ने रिलाइंस जियो, भारती एयरटेल, वोडाफोन और एमटीएनएल के आवेदनों को इसके लिए मंजूरी दी है। इनमें से कोई भी कंपनी चीनी कंपनियों की तकनीक का उपयोग नहीं कर रही है। दूरसंचार विभाव सचिव अंशु प्रकाश ने कहा, ये परीक्षण 5जी स्पेक्ट्रम नीलामी और नेटवर्क बहाल करने के समय के अंतर को कम करेगा। इससे पहले नीलामी के बाद परीक्षण हुआ था। इस बार समय का लाभ मिलेगा और दूरसंचार ऑपरेटर 5जी नेटवर्क के लिए पहले से तैयार होंगे। इससे ऑपरेटर अपने विक्रेताओं, प्रौद्योगिकी और उपकरणों के प्रकार का चयन करने में सक्षम होंगे। उन्होंने कहा, भारत संचार निगम लिमिटेड अलग से परीक्षण करेगा और उनका आवेदन जल्द आएगा।

वोडाफोन आइडिया के प्रस्ताव की समीक्षा

दूरसंचार विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि दूरसंचार ऑपरेटरों द्वारा दिए गए विकल्पों को विभाग ने मंजूरी दे दी है। मावेनीर के साथ साझेदारी में परीक्षण करने के वोडाफोन आइडिया के प्रस्ताव की अभी समीक्षा की जा रही है और उस पर अभी निर्णय लिया जाएगा। वोडाफोन आइडिया ने परीक्षेण के लिए तीन आवेदन जमा किए थे। इस संबंध में हुआवेई को भेजी गए ईमेल का उसने कोई उत्तर नहीं दिया। दूरसंचार विंभाग के अनुसार 5जी तकनीक 4जी की तुलना में दस गुना बेहतर डाउनलोड स्पीड देने और स्पेक्ट्रम क्षमता में तीन गुना तक बेहतर परिणाम देने में सक्षम है।

दूरसंचार विभाग ने 5जी परीक्षण के लिए स्वीकृत दूरसंचार गीयर विनिर्माताओं की सूची में एरिक्सन, नोकिया, सैमसंग, सी-डॉट और रिलायंस जियो की स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। इसका मतलब है कि चीनी कंपनियां 5जी परीक्षणों का हिस्सा नहीं होंगी। विभाग ने एक बयान में कहा, ÷दूरसंचार विभाग ने 5जी तकनीक के उपयोग के परीक्षण के लिए दूरसंचार सेवा प्रदान करने वाली कंपनियों को अनुमति दे दी। इसमें भारती एयरटेल, रिलाइंस जियोइंफोकॉम लिमिटेड, वोडाफोन आईडिया इंडिया लिमिटेड और एमटीएनएल शामिल हैं।

JIO खुद की तकनीक का करेगी ट्रायल

इससे पहले भारती एयरटेल और वोडाफोन ने चीन की हुआवेई कंपनी की तकनीक का उपयोग कर परीक्षण करने का प्रस्ताव पेश किया था। बाद में उन्होंने हालांकि अपने आवेदन में कहा कि 5जी परीक्षण में वह चीन की किसी कंपनी की तकनीक की उपयोग नहीं करेगी। विभाग ने कहा, ''इन दूरसंचार सेवा प्रदाता कंपनियों ने एरिक्सन, नोकिया, सैमसंग और सी-डॉट जैसे मूल उपकरण विनिर्माताओं और प्रौद्योगिकी प्रदाताओं के साथ करार किया है। जबकि रिलायंस जियोइंफोकॉम लिमिटेड अपनी खुद की 5जी तकनीक का उपयोग करके यह परीक्षण करेगी। दूरसंचार विभाग का यह कदम इस ओर इशारा करता है कि केंद्र सरकार देश में शुरू होने वाली 5जी दूरसंचार सेवाओं में चीनी कंपनियों को हिस्सा लेने से रोक सकती है। बयान में बताया कि टेलीकॉम कंपनियों को विभिन्न बैंड में प्रयोगात्मक स्पेक्ट्रम का उपयोग करने की अनुमति दी गई है। इसमें मिड-बैंड 3.2 गीगाहट्र्ज से 3.67 गीगाहट्र्ज़, मिलीमीटर वेव बैंड 24.25 गीगाहट्र्ज़ से 28.5 गीगाहट्र्ज़ और उप-गीगाहट्र्ज़ बैंड 700 गीगाहट्र्ज़ तक शामिल हैं।

ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में भी करना होगा ट्रायल

विभाग ने कहा, दूरसंचार ऑपरेटरों को 5जी परीक्षणों के संचालन के लिए अपने मौजूदा 800 मेगाहट्र्ज, 900 मेगाहट्र्ज, 1800 मेगाहट्र्ज और 2500 मेगाहट्र्ज स्पेक्ट्रम का उपयोग करने की भी अनुमति दी जाएगी। वर्तमान में परीक्षणों की अवधि 6 महीने की है। इसमें उपकरण की खरीद और स्थापना के लिए 2 महीने की समयावधि शामिल है। इसके अलावा अनुमति पत्र में यह स्पष्ट कहा गया है कि दूरसंचार कंपनियों को 5जी परीक्षण शहरी क्षेत्रों समेत ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में भी करना होगा ताकि 5जी तकनीक का लाभ केवल शहरों में ही नहीं बल्कि देशभर में उठाया जा सके।

कोरोना का असरः रेटिंग एजेंसी S&P ने घटाया भारत के GDP ग्रोथ का अनुमान

बिजनेस डेस्क:

एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग ने बुधवार को चालू वित्त वर्ष के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर के पूर्वानुमान को घटाकर 9.8 प्रतिशत कर दिया। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि कोविड-19 संक्रमण की दूसरी लहर के चलते आर्थिक सुधार की गाड़ी पटरी से उतर सकती है। एसएंडपी ने मार्च में कहा था कि अर्थव्यवस्था को तेजी से खोलने और राजकोषीय प्रोत्साहनों के कारण वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान भारत की वृद्धि दर 11 प्रतिशत रह सकती है। एसएंडपी ने इस समय भारत की रेटिंग स्थिर दृष्टिकोण के साथ 'बीबीबी-% तय की है। उसने कहा कि भारत की संप्रभु क्रेडिट रेटिंग पर असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर मंदी की गहराई से निर्धारित होगा। भारत सरकार की राजकोषीय स्थित बेहद तंग है। वित्त वर्ष 2021 में आम सरकारी घाटा जीडीपी का लगभग 14 प्रतिशत था। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स एशिया-प्रशांत के मुख्य अर्थशास्त्री शॉन रोशे ने कहा, ÷भारत की दूसरी लहर ने हमें इस वित्त वर्ष के लिए अपने जीडीपी वृद्धि के पूर्वानुमान को संशोधित करने के लिए मजबूर किया।%%

गोल्डमैन सैक्स ने भी घटाया ग्रोथ रेट का अनुमान

अमेरिकी ब्रोकरेज फर्म गोल्डमैन सैक्स ने कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप और उसके चलते कई राज्यों तथा शहरों में लागू लॉकडाउन के मद्देनजर वित्त वर्ष 2021-22 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि के पूर्वानुमान को 11.7 प्रतिशत से घटाकर 11.1 प्रतिशत कर दिया। गोल्डमैन सैक्स ने एक रिपोर्ट में कहा कि लॉकडाउन की तीव्रता पिछले साल के मुकाबले कम है। फिर भी, भारत के प्रमुख शहरों में सख्त प्रतिबंधों का असर साफ दिखाई दे रहा है।

भारतीय भाषाओं के लिए "टॉक टू टाइप" सुविधा लाया "कू"

कू ने जादुई टॉक टू टाइप फीचर को लांच करने की घोषणा की है। जो कोई भी अपने विचारों को सभी से साझा करना चाहता है वह सब आसानी से बिना टाइप किए कर सकता है। आप अपने विचारों को बोलें और शब्द जादुई रूप से स्क्रीन पर दिखाई देंगे और यह सब सिर्फ एक बटन के क्लिक पर और कीबोर्ड का उपयोग किए बिना। कू पर वर्तमान में उपलब्ध सभी भारतीय भाषाओं में ऐसा संभव होगा। मूल भारतीय भाषा में लोगों के साथ विचार साझा करने का यह सबसे आसान तरीका कहलाएगा।

कू के सह संस्थापक अप्रमेय राधाकृष्ण ने कहा; यह टॉक टू टाइप सुविधा जादुई है और क्षेत्रीय भाषा के क्रिएटर्स के लिए क्रिएशन को एक बेहतरीन स्तर पर ले जाती है। उपयोगकर्ताओं को अब कीबोर्ड का उपयोग करके लंबे विचारों को टाइप नहीं करना होगा। भारतीय भाषा बोलने वाले सभी जन अब अपने मन की बात फोन पर बोले और शब्द जादुई रूप से स्क्रीन पर दिखाई देंगे। जिन लोगों के लिए स्थानीय भाषाओं में लिखना मुश्किल था उनके लिए यह सुविधा उनके सारे दर्द दूर कर देती है। अभिव्यक्ति के सबसे आसान स्थानीय रूपों के द्वारा हर भारतीय के विचार पूरे भारत तक सहज रूप से पहुंचा कर हम भारतीयों और भारत को अपना योगदान देते रहेंगे।

घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या अप्रैल में 29% घटी- इक्रा

नई दिल्ली:

कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर का प्रभाव अप्रैल में घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या पर साफ दिखा और मार्च की तुलना में इसमें करीब 29 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। निवेश सूचना एवं साख निर्धारक एजेंसी इक्रा ने आज एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि अप्रैल में घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या 55 लाख से 56 लाख के बीच रही। यह मार्च के 78.2 लाख की तुलना में 29 प्रतिशत कम है। यह संख्या अक्टूबर 2020 के स्तर से कम है। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की ओर से हालांकि अप्रैल के आधिकारिक आंकड़े अभी जारी नहीं किए गए हैं। पिछले साल दो महीने तक नियमित यात्री उड़ानों पर पूर्ण प्रतिबंध के बाद 25 मई से घरेलू मार्गों पर उड़ानें बहाल की गई थीं। शुरू में 33 प्रतिशत उड़ानों की अनुमति दी गई थी जिसे तीन दिसंबर 2020 से बढ़ाकर 80 प्रतिशत कर दिया गया है। डीजीसीए के आंकड़ों के अनुसार, मई 2020 से फरवरी 2021 तक हवाई यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ती रही लेकिन मार्च 2021 में इसमें मामूली गिरावट देखी गई थी।

इक्रा ने बताया कि अप्रैल में सीटों की उपलब्धता में भी मार्च के मुकाबले करीब 15 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। मार्च में कुल 71,300 उड़ानें रवाना हुईं जबकि अप्रैल में यह संख्या घटकर 60,300 पर आ गई। इससे जाहिर होता है कि कोविड-19 के कारण लोग हवाई यात्रा करने से बच रहे हैं। इक्रा की उपाध्यक्ष किंजल साह ने बताया कि मार्च और फरवरी में रोजाना औसतन दो हजार 300 उड़ानें रवाना हुईं। अप्रैल में यह संख्या दो हजार पर रही। अप्रैल में प्रति उड़ान यात्रियों की संख्या भी मार्च के 109 से घटकर 93 पर आ गई।

कोविड में राहतः PMGKY के तहत 80 करोड़ लाभार्थियों को मिलेगा मुफ्त अनाज

बिजनेस डेस्क:

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्ना योजना (पीएमजीकेवाई) के तहत मई-जून की अवधि के दौरान लगभग 80 करोड़ पीडीएस लाभार्थियों को प्रति माह पांच किग्रा मुफ्त अनाज वितरित किए जाने के कार्यक्रम को मंजूरी दी। यह योजना पहले ही प्रभाव में आ चुकी है। पीएमजीकेवाई को पहले वर्ष 2020 में जुलाई तक के तीन महीने के लिए घोषित किया गया था। गरीबों पर कोविड-19 के आर्थिक प्रभाव से निपटने की इस योजना को बाद में नवंबर, 2020 तक आगे बढ़ा दिया गया था।

प्रति व्यक्ति 5KG अनाज मुफ्त मिलेगा

कोविड-19 के दूसरी लहर के मद्देनजर, खाद्य मंत्रालय ने इस योजना को एक मई, 2021 से दो महीने के लिए फिर लागू किया है। मंत्रिमंडल ने इसे बुधवार को मंजूरी देने की औपचारिकता पूरी की।

सरकार ने एक बयान में कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में इसे विगत में लागू किए जाने की तिथि से मंजूरी प्रदान की गई, पीएमजीकेएवाई-III के तहत अतिरिक्त खाद्यान्न के आवंटन के लिए यह दो महीने की अवधि मई से जून 2021 तक होगा। इसमें कहा गया है कि इस योजना के तहत, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के तहत आने वाले लगभग 79.88 करोड़ लाभार्थियों को, प्रति माह प्रति व्यक्ति 5 किलोग्राम अनाज मुफ्त में दिया जाएगा। इसमें प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के तहत आने वाले लोग भी शामिल हैं।

अनाज के कारण नहीं होगी किसी गरीब को तकलीफ

बयान में कहा गया है कि इसमें खाद्यान्नों की कुल खपत लगभग 80 लाख टन हो सकती है और इस पर 25,332.92 करोड़ रुपए की अनुमानित खाद्य सब्सिडी देनी पड़ सकती है।

सरकार के अनुसार, यह अतिरिक्त आवंटन, कोरोना वायरस की वजह से उत्पन्न आर्थिक दिक्कतों के कारण गरीबों को होने वाली कठिनाइयों का निवारण करेगा।

सरकार का कहना है कि इससे इस अवधि में अनाज के कारण किसी गरीब को तकलीफ नहीं होगी। पीएमजीकेएवाई के तहत राज्यों को खाद्यान्न का आवंटन खाद्य मंत्रालय द्वारा एनएफएसए के तहत मौजूदा आवंटन-अनुपात के आधार पर किया जाएगा।

कोरोना से हारा आईपीएल: बाद लीग स्थगित होने के बाद अब विदेशी खिलाड़ियों को सुरक्षित वापस भेजेगा बोर्ड

नई दिल्ली।(एजेंसी)।

जैव सुरक्षित वातावरण (बायो बबल) में कोविड-19 के कई मामले पाये जाने के कारण पिछले लगभग एक महीने से सुचारू रूप से चल रहे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) को मंगलवार को अनिश्चितकाल के लिये स्थगित कर दिया गया जिसका टीमों ने स्वागत किया हालांकि कड़े यात्रा प्रतिबंधों के कारण विदेशी खिलाड़ी सुरक्षित स्वदेश लौटने के लिये बीसीसीआई की कार्रवाई का इंतजार कर रहे हैं।

लीग स्थगित करने की घोषणा सनराइजर्स हैदराबाद के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋद्धिमान साहा और दिल्ली कैपिटल्स के स्पिनर अमित मिश्रा के कोविड-19 के लिये पॉजिटिव पाये जाने के बाद की गयी। इससे पहले कोलकाता नाइट राइडर्स के वरूण चक्रवर्ती और संदीप वारियर भी पॉजिटिव पाये गए थे। चेन्नई सुपर किंग्स के गेंदबाजी कोच लक्ष्मीपति बालाजी भी पॉजिटिव पाये गए। लीग के चेयरमैन बृजेश पटेल ने आईपीएल द्वारा जारी एक बयान में कहा ,'' इंडियन प्रीमियर लीग की संचालन परिषद और बीसीसीआई की आपात बैठक में सर्वसम्मति से आईपीएल 2021 सत्र तुरंत प्रभाव से स्थगित करने का फैसला लिया गया।'' उन्होंने कहा ,'' बीसीसीआई खिलाड़ियों, सहयोगी स्टाफ और अन्य प्रतियोगियों की सुरक्षा को लेकर कोई समझौता नहीं करना चाहता। यह फैसला सभी संबंधित पक्षों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और भलाई को ध्यान में रखकर लिया गया।'' इस घोषणा के कुछ घंटे बाद ही चेन्नई सुपर किंग्स के बल्लेबाजी कोच माइकल हसी भी कोरोना पॉजिटव पाये गए। आईपीएल ने इसके साथ ही कहा कि बीसीसीआई खिलाड़ियों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिये अपनी तरफ से हर तरह के प्रयास करेगा। आईपीएल में इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड सहित कई अन्य देशों के खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं।

आईपीएल ने कहा, ''यह मुश्किल समय है विशेषकर भारत में और हमने कुछ सकारात्मकता और खुशी लाने की कोशिश की लेकिन अब जरूरी है कि टूर्नामेंट निलंबित किया जाए और हर कोई इस मुश्किल दौर में वापस अपने परिवार और प्रियजनों के पास चला जाए।'' उसने कहा, 'बीसीसीआई आईपीएल 2021 में भाग ले रहे भागीदारों की सुरक्षित वापसी के लिये अपनी तरफ से हर संभव प्रयास करेगा। '' आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट बोर्ड ने फैसले का स्वागत करते हुए खिलाड़ियों की वापसी के लिये बीसीसीआई की योजना पर भरोसा जताया। उधर आस्ट्रेलिया ने साफ तौर पर कहा कि भारत से आने वाली उड़ानों पर 15 मई तक लगे प्रतिबंध में वह कोई रियायत नहीं देगा। क्रिकेट आस्ट्रेलिया और आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर संघ ने संयुक्त बयान में कहा ,'' हम 15 मई तक भारत से आने वाली उड़ानों पर प्रतिबंध के आस्ट्रेलिया सरकार के फैसले का सम्मान करते हैं और किसी रियायत की मांग नहीं करेंगे।'' एक सीनियर अधिकारी ने बताया कि बीसीसीआई को आईपीएल स्थगित होने से 2200 करोड़ रूपये का नुकसान हो सकता है। टूर्नामेंट का फाइनल 30 मई को अहमदाबाद में होना था। अभी तक इसमें 24 दिन ही खेल हो सका और 29 मैच ही खेले गए। बोर्ड के एक अधिकारी ने कहा ,''सत्र बीच में रद्द होने से हमें 2000 से 2500 करोड़ रूपये तक का नुकसान होगा। अनुमानतः 2200 करोड़ रूपये का नुकसान हो सकता है।'' बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने कहा, ''हम देखेंगे कि कया साल के दौरान बाद में हमें आईपीएल आयोजन के लिये कोई उपयुक्त समय मिल सकता है। यह सितंबर हो सकता है लेकिन अभी यह केवल कयास होंगे। अभी की स्थिति यह है कि हम टूर्नामेंट का आयोजन नहीं कर रहे हैं।'' इससे पहले सोमवार को चेन्नई सुपर किंग्स के गेंदबाजी कोच एल बालाजी तथा कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के गेंदबाजों संदीप वारियर्स और वरुण चक्रवर्ती के परिणाम भी पॉजिटिव आये थे। संक्रमण बढ़ने के कारण दो आईपीएल मैचों को स्थगित कर दिया गया था। टूर्नामेंट नौ अप्रैल को शुरू हुआ था तथा केकेआर में मामले पाये जाने तक यह सहजता से आगे बढ़ रहा था। साथ ही दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान के कुछ मैदानकर्मी पॉजिटिव पाए गए हैं। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के अध्यक्ष रोहन जेटली ने हालांकि कहा कि इनमें कोई भी मैदानकर्मी वह नहीं है जिसे मैदान पर जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इससे कुछ दिन पहले आस्ट्रेलिया के तीन खिलाड़ी कोविड-19 की चिंताओं के कारण लीग से हट गये थे। वहीं भारत के सीनियर स्पिनर आर अश्विन ने अपने परिजनों के कोरोना पॉजिटिव पाये जाने के बाद आईपीएल बीच में छोड़ दिया था। कोविड-19 के कारण 2020 में आईपीएल का आयोजन यूएई में जैव सुरक्षित वातावरण में किया गया था। तब केवल टूर्नामेंट से पहले संक्रमण के कुछ मामले सामने आये थे। भारत में अभी प्रतिदिन तीन लाख से अधिक माामले सामने आ रहे हैं जबकि हर दिन 3000 से अधिक लोगों की मौत हो रही है।

आईपीएल 2021: चार्टर्ड उड़ानों से मालदीव जाएंगे ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर

कोलकाता। (एजेंसी)।

आईपीएल में भाग लेने वाले ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर जल्दी ही चार्टर्ड विमान से मालदीव रवाना होंगे जहां वे ऑस्ट्रेलियाई सीमा के खुलने का इंतजार करेंगे। एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। ऑस्ट्रेलिया ने कोरोनावायरस महामारी की दूसरी लहर से जूझ रहे भारत से आने वालों के लिए 15 मई तक यात्रा पर प्रतिबंध लगा दिया है।

ऑस्ट्रेलिया के 38 सदस्यीय दल में खिलाड़ी, कोच, अंपायर, कमेंटेटर शामिल हैं जो अब मालदीव में इंतजार करेंगे। केकेआर टीम के एक अधिकारी ने कहा,सभी ऑस्ट्रेलियाई आज से दिल्ली में जुटना शुरू हो गए हैं और वे चार्टर्ड विमानों से मालदीव रवाना होंगे। चेन्नई सुपर किंग्स के बल्लेबाजी कोच माइक हसी को भारत में रूकना होगा जो कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं। क्रिकेटर से कमेंटेटर बने माइकल स्लेटर पहले ही मालदीव पहुंच गए हैं। आईपीएल आयोजकों ने चार भारतीय खिलाड़ियों के कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद मंगलवार को लीग अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी।

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर संघ की खिलाड़ियों को सलाह, कोविड-19 काल में जांच-परख कर करें विदेशी टी20 लीग से करार

मेलबर्न।(एजेंसी)।

ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर संघ (एसीए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी टोड ग्रीनबर्ग ने खिलाड़ियों को सलाह दी है कि वैश्विक महामारी को देखते हुए निकट भविष्य में विदेशी टी20 लीग के लिए करार करने से पहले उससे जुड़े जोखिम को अच्छे से 'जांच-परख' लें। ऑस्ट्रेलिया ने भारत से आने वालों पर कम से कम 15 मई तक का प्रतिबंध लगा दिया है, जिससे इंडियन प्रीमियर लीग में भाग ले रहे लगभग ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ी, सहयोगी सदस्य, कमेंटेटर और मैच अधिकारीमिलाकर 40 सदस्य स्वदेश रवाना होने से पहले मालदीव जाएंगे।

ग्रीनबर्ग ने 'ईएसपीएनक्रिकइंफो' से कहा, ''मुझे यकीन नहीं है इससे खिलाड़ियों के मन में संकोच (भविष्य में) होगा , लेकिन यह सुनिश्चित करेगा कि खिलाड़ी समझौतों पर हस्ताक्षर करने से पहले थोड़ी समझदारी दिखायेंगे।'' उन्होंने कहा, '' कोरोना वायरस के कारण हमारी आंखों के सामने दुनिया बदलाव के दौर से गुजर रही है, दुनिया के उस हिस्से में (भारत) में इसके मामले तेजी से बढ़ रहे है।'' जोश हेजलवुड, मिशेल मार्श और जोश फिलिप जैसे कुछ क्रिकेटरों ने बबल थकान का हवाला देते हुए आईपीएल शुरू होने से पहले ही अपना नाम वापस ले लिया था जबकि एडम जम्पा, केन रिचर्डसन और एंड्रयू टाये ने टूर्नामेंट को बीच में छोड़ दिया और सरकार द्वारा सीमा बंद करने से पहले अपने देश पहुंच गये।

ग्रीनबर्ग ने कहा, '' हम ऑस्ट्रेलिया में अपनी स्वतंत्रता का लुत्फ उठा रहे हैं। लेकिन वहां पर स्थिति काफी बुरी है। इससे कुछ खिलाड़ियों को संदेश जाता है कि आप कोई भी निर्णय लेने से पहले चीजों को अच्छी तरह जांच-परख ले।'' ग्रीनबर्ग ने स्वीकार किया कि ऑस्ट्रेलियाई दल के कई सदस्य इस समय चिंता और तनाव का सामना कर रहे होंगे। उन्होंने वादा किया कि खिलाड़ी जब स्वदेश लौटेंगे तो उनकी मदद की जाएगी।

भारत में कोविड-19 से पैदा हुए हालात पर बोले सुरेश रैना, यह अब मजाक नहीं है, जिंदगी में इतना असहाय महसूस नहीं किया

नई दिल्ली।(एजेंसी)।

भारत में कोरोना महामारी की दूसरी लहर से पूरा भारत प्रभावित है। आईपीएल 2021 भी कोरोना की महामारी से अछूता नहीं रहा है। बायो बबल की व्यवस्था के बावजूद कई खिलाड़ियों और टीम के सपोर्टिंग स्टॉफ के सदस्य कोरोना पॉजिटिव हो गए। मंगलवार को बीसीसीआई ने इसे स्थगित करने का फैसला लिया। इसके बाकी मैचों कब होंगे इसे लेकर अभी कोई स्पष्टता नहीं है। चेन्नई सुपर किंग्स के स्टार बल्लेबाज और पूर्व भारतीय किक्रेटर सुरेश रैना ने देश में कोविड 19 की वजह से पैदा हुए गंभीर स्थिति अपनी प्रतिक्रिया दी।

सुरेश रैना ने मंगलवार को ट्वीट कर लिखा, 'यह अब मजाक नहीं है. इतने सारे लोगों की जिंदगी दांव पर लगी है और जीवन में कभी इतना

असहाय महसूस नहीं किया। चाहे हम कितनी भी मदद करना चाहें, लेकिन वाकई में हमारे पास संसाधन खत्म हो चुके हैं। इस देश का हर एक व्यक्ति सलाम का हकदार है, जो एक दूसरे की जिंदगी बचाने के लिए खड़ा है'। गौरतलब है कि कई पूर्व क्रिकेटर और मौजूदा क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, शिखर धवन, जयदेव उनादकट, पांड्या ब्रदर्स ने लोगों तक ऑक्सीजन कंसंट्रेटर पहुंचाने में अपना योगदान दिया है।

केकेआर को दो खिलाड़ियों वरुण चक्रवर्ती और संदीप वॉरियर की रिपोर्ट सोमवार को पॉजिटिव आई थी। इसके बाद आरसीबी और केकेआर के बीच होने वाला मैच स्थगित करना पड़ा था। इसके बाद चेन्नई सुपर किंग्स के कैंप से तीन कोविड 19 के मामले सामने आए। इसी कड़ी में दिल्ली कैपिटल्स और सनराइजर्स हैदराबाद के दो खिलाड़ियों अमित मिश्रा और ऋद्धिमान साहा की कोविड रिपोर्ट मंगलवार को पॉजिटिव आई। इस वजह से बीसीसीआई ने आईपीएल 2021 को स्थगित करने का फैसला लिया। आईपीएल 2021 में अब कर 29 मैच खेले गए थे। दिल्ली कैपिटल्स 12 अंको के साथ टॉप पर थी और दूसरे नंबर पर सीएसके है। सुरैश रैना ने पहले मैच में अर्धशतक लगाया था। इसके बाद वो बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं कर पाए।

तोक्यो ओलंपिक जाने वाले अपने खिलाड़ियों को पहले टीके लगायेगा इटली

रोम। इटली की ओलंपिक समिति तोक्यो ओलंपिक जाने वाले पूरे दल को टीके लगवाने क इंतजाम कर रही है। तोक्यो ओलंपिक खेलने वाले इतालवी खिलाड़ियों में से दो तिहाई को टीके लग चुके हैं क्योंकि वे सेना से सम्बद्ध हैं। बाकी खिलाड़ियों, कोचों और सहयोगी स्टाफ को शुक्रवार से टीके लगेंगे। तोक्यो में 23 जुलाई से शुरू हो रहे ओलंपिक के लिये इटली के 237 खिलाड़ी क्वालीफाई कर चुके हैं। वहीं टोक्यो ओलंपिक से पहले जापान ने भी रविवार को कोरोना के अपने पहले टीके को औपचारिक मंजूरी दे दी। जापान जल्द ही देशव्यापी टीकाकरण अभियान शुरू करेगा। देश के स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि उसने फाइजर इंक द्वारा विकसित टीके को मंजूरी दी है।

सीएसके के बल्लेबाजी कोच माइक हसी कोरोना पॉजिटिव

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर किंग्स के बल्लेबाजी कोच माइकल हसी मंगलवार को कोरोनावायरस जांच में पॉजिटिव पाए गए। इससे 1 दिन पहले गेंदबाजी कोच लक्ष्मीपति बालाजी भी पॉजिटिव पाए गए थे। इंडियन प्रीमियर लीग के सूत्रों ने बायो बबल में कोरोना संक्रमण फैलने के कारण 14वां सत्र अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने के कुछ घंटे बाद ही यह जानकारी दी। हसी की जांच रिपोर्ट मंगलवार को आई। आईपीएल सूत्र ने बताया कि हसी की जांच की गई थी और उनका नमूना पॉजिटिव आया है। दोबारा जांच के लिए भेजा गया नमूना भी पॉजिटिव निकला।

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट क्रिकेटर मैकगिल का हुआ था अपहरण

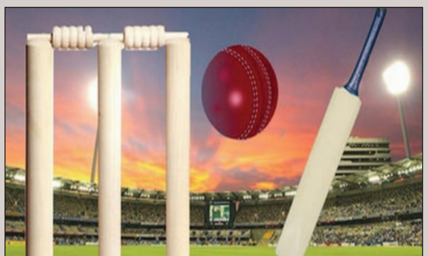

सिडनी।(एजेंसी)।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व टेस्ट क्रिकेटर स्टुअर्ट मैकगिल का पिछले महीने सिडनी में उनके घर से कथित तौर पर अपहरण किया गया था लेकिन 1 घंटे बाद उन्हें छोड़ दिया गया। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया ने बुधवार को यह जानकारी दी।

न्यू साउथ वेल्स पुलिस ने 14 अप्रैल को हुए इस कथित अपहरण के पीड़ित का जिक्र 50 वर्षीय व्यक्ति के रूप में किया है। ऑस्ट्रेलियाई ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन और न्यूज कॉर्प के समाचार पत्रों सहित मीडिया रिपोर्ट में पीड़ित की पहचान मैकगिल के रूप में की गई है।

मीडिया ने कहा कि सिडनी के उत्तरी हिस्से में सड़क पर एक व्यक्ति ने मैकगिल को रोका और फिर इसके बाद 2 और व्यक्ति आए और उन्होंने जबरन इस पूर्व क्रिकेटर को कार में डाल दिया।मैकगिल को कथित तौर पर सिडनी के दक्षिण-पश्चिम हिस्से में ले जाया गया और कथित तौर पर मारपीट के बाद उन्हें दूसरी जगह ले जाया गया और फिर बाद में छोड़ दिया गया।

न्यू साउथ वेल्स पुलिस ने विज्ञप्ति में कहा कि उन्हें 20 अप्रैल को एक घटना की जानकारी दी गई थी। पुलिस ने बयान में कहा कि लूट और गंभीर अपराध विभाग ने इसके बाद जांच की और 4 व्यक्तियों को बुधवार सुबह स्थानीय समयानुसार 6 बजे गिरफ्तार किया गया जिनकी उम्र 27, 29, 42 और 46 बरस है।

गिरफ्तार लोगों को स्थानीय पुलिस थाने ले जाया गया और उनके खिलाफ आरोप लगाए जाएंगे। गिरफ्तार व्यक्तियों के नामों का तुरंत खुलासा नहीं किया गया है। पूर्व लेग स्पिनर मैकगिल ने ऑस्ट्रेलिया की ओर से 1988 से 2008 के बीच 44 टेस्ट खेले और इस दौरान 208 विकेट चटकाए।

आईपीएल 2021 सस्पेंड होने के बाद अब सट्टेबाजी की आशंका, दिल्ली में पकड़े गए दो सटोरिए

नई दिल्ली।(एजेंसी)।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड(बीसीसीआई) की भ्रष्टाचार रोधी इकाई(एसीयू) के प्रमुख शब्बीर हुसैन शेखदम खंडवावाला ने आशंका जताई है कि हाल ही में निलंबित इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के दौरान अरुण जेटली क्रिकेट मैदान में खेले गए मैचों में कथित सटोरियो को एक सफाई कर्मचारी 'पिच-सिडिंग' के जरिए मदद कर रहा था। पिच-सिडिंग की मदद से गेंद-दर-गेंद सट्टेबाजी की जाती है। इसमें मैच और टेलीविजन पर उसके प्रसारण के बीच लगने वाले समय का सट्टेबाज फायदा उठाते हैं। मैदान में मौजूद व्यक्ति सट्टेबाजों को टेलीविजन पर प्रसारण से कुछ पल पहले ही अगली गेंद के नतीजे की जानकारी दे देता है। गुजरात पुलिस के इस पूर्व महानिदेशक ने बुधवार को पीटीआई से कहा, 'एसीयू के एक अधिकारी ने इस मामले में एक व्यक्ति को पकड़ा और उसका विवरण दिल्ली पुलिस को सौंप दिया है। वह संदिग्ध अपराधी हालांकि अपने दोनों मोबाइल फोन को छोड़कर भागने में कामयाब रहा। एसीयू ने दिल्ली पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज करा दी है।' उन्होंने कहा, 'हम दिल्ली पुलिस के शुक्रगुजार हैं कि एसीयू की जानकारी पर उन्होंने एक अन्य मामले में कोटला से दो लोगों को गिरफ्तार किया। दिल्ली पुलिस ने दो मई को राजस्थान रॉयल्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच खेले गए मैच के दौरान नकली पहचान पत्र के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया था।'

आईपीएल के स्थगित होने से बीसीसीआई को हो सकता है 2000 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

जैविक रूप से सुरक्षित माहौल में कोविड-19 मामलों के कारण मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करने से भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) को प्रसारण और प्रायोजक राशि में 2 हजार करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हो सकता है। पिछले कुछ दिनों में अहमदाबाद और नई दिल्ली में खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के बीच कोविड-19 के कई मामले सामने आने के बाद बीसीसीआई को आईपीएल को स्थगित करने को बाध्य होना पड़ा।

बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर बताया कि इस सत्र को बीच में स्थगित करने से हमें 2,000 से 2,500 करोड़ रुपए का नुकसान हो सकता है। मैं कहूंगा कि 2,200 करोड़ रुपए की राशि अधिक सटीक होगी। इस 52 दिन चलने वाले 60 मैचों के टूर्नामेंट का समापन 30 मई को अहमदाबाद में होना था। हालांकि सिर्फ 24 दिन क्रिकेट खेला गया और इस दौरान 29 मैचों के आयोजन के बाद वायरस के कारण टूर्नामेंट को स्थगित करना पड़ा।

बीसीसीआई को सबसे अधिक नुकसान स्टार स्पोर्ट्स से टूर्नामेंट के प्रसारण अधिकारी से मिलने वाली राशि का होगा। स्टार का 5 साल का अनुबंध 16 हजार 347 करोड़ रुपए का है, जो प्रतिवर्ष 3,269 करोड़ से कुछ अधिक होता है। अगर सत्र में 60 मैच होते हैं तो प्र?त्येक मैच की राशि लगभग 54 करोड़ 50 लाख रुपए बनती है। स्टार अगर प्रति मैच के हिसाब से भुगतान करता है तो 29 मैचों की राशि लगभग 1,580 करोड़ रुपए होती है। ऐसे में बोर्ड को 1,690 करोड़ का नुकसान होगा।

इसी तरह मोबाइल निर्माता विवो टूर्नामेंट के टाइटल प्रायोजक के रूप में प्रति सत्र 440 करोड़ रुपए का भुगतान करता है और टूर्नामेंट के स्थगित होने के कारण बीसीसीआई को आधी से कम राशि मिलने की उम्मीद है।अनअकेडमी, ड्रीम-11, सीरेड, अपस्टॉक्स और टाटा मोटर्स जैसी सहायक प्रायोजक कंपनियां भी हैं जिसमें से प्र?त्येक प्रति सत्र लगभग 120 करोड़ रुपए के आसपास भुगतान करती हैं।

अधिकारी ने कहा कि सभी भुगतानों को आधा या इससे कुछ कर दिया जाए और आपको लगभग 2,200 करोड़ रुपए का नुकसान होगा। असल में नुकसान इससे कहीं अधिक हो सकता है लेकिन यह सत्र का अनुमानित नुकसान है। इस नुकसान से केंद्रीय राजस्व पूल (बीसीसीआई जो पैसा 8 फ्रेंचाइजियों को बांटता है) की राशि भी लगभग आधी हो जाएगी। अधिकारी ने हालांकि यह नहीं बताया कि टूर्नामेंट के निलंबित होने से प्रत्येक फ्रेंचाइजी को कितना नुकसान होगा?

खिलाड़ियों को अनुपात की जगह समय के हिसाब से राशि का भुगतान किया जाएगा। खिलाड़ी ने अगर खुद को टूर्नामेंट के एक हिस्से के लिए उपलब्ध रखा है तो वेतन अनुपात के हिसाब से होगा। एक सीनियर खिलाड़ी ने हालांकि कहा कि अनुपात तभी

लागू होगा, जब कोई खिलाड़ी अपनी मर्जी से टूर्नामेंट के कुछ हिस्से के लिए खुद को उपलब्ध रखेगा। आयोजकों ने टूर्नामेंट को बीच में रोका है और ऐसी स्थिति में फ्रेंचाइजी के कम से कम आधे सत्र का नुकसान करने की संभावना है।

समाज को समरस बनाने का कार्य महाराष्ट्र-गुजरात के संतों ने किया

सृजनधर्मियों की प्रतिष्ठित संस्था राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया

अहमदाबाद ।

सृजनधर्मियों की प्रतिष्ठित संस्था राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया । यह संगोष्ठी महाराष्ट्र व गुजरात के संतों के योगदान पर केंद्रित थी। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सुवर्णा जाधव, मुंबई थीं । विशिष्ट वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कला संकायाध्यक्ष प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा थे। मुख्य वक्ता संस्था के राष्ट्रीय मुख्य संयोजक प्राचार्य डॉक्टर शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे, वरिष्ठ प्रवासी लेखक सुरेश चन्द्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नार्वे, डॉ भरत शेणकर, अहमदनगर, डॉ ख्याति पुरोहित, अहमदाबाद, बाला साहेब तोरस्कर, राष्ट्रीय महासचिव डॉक्टर प्रभु चौधरी थे । अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ हरेराम वाजपेयी, इंदौर ने की। संगोष्ठी का सूत्र संयोजन डॉ मुक्ता कान्हा कौशिक, रायपुर ने किया। यह संगोष्ठी महाराष्ट्र व गुजरात राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित की गई थी। विशिष्ट वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि समूचे देश में वर्ग, संप्रदाय, जाति, क्षेत्र की सीमाओं को तोड़कर पूरे समाज को समरस बनाने का कार्य महाराष्ट्र और गुजरात के संतों ने किया था।

भक्ति की गंगा के पाट को चौड़ा करने का कार्य महाराष्ट्र और गुजरात के संतों ने किया। वहां के भक्तिआंदोलन ने भारत के विविध अंचलों पर गहरा प्रभाव डाला। यह प्रभाव भक्तिकी लोक-व्याप्ति, सहज जीवन-दर्शन और सामाजिक समरसता के प्रसार में दिखाई देता है। संतों को याद करना भारत की संस्कृति और मूल्य दृष्टि से जुड़ना है । गांधी जी और डॉ आंबेडकर के विचारों पर संतों की वाणी का गहरा प्रभाव रहा है। उन्होंने गुजरात के भक्तनरसी मेहता, भालन, मीरा, प्रेमानंद, दयाराम, सहजानंद व महाराष्ट्र के संत नामदेव, तुकाराम, तुकड़ो जी आदि के योगदान की चर्चा की। अध्यक्षता करते हुए डॉ हरेराम वाजपेयी, इंदौर ने कहा कि संत की पहचान किसी विशेष वेशभूषा या तिलक से नहीं होती, बल्कि उसके कर्मों से होती है।

इनके कारण वह अमर होता है । संत बिटप सरिता गिरि धरनी परहित हेतु सबन की करनी, संत तुलसीदास जी की यह परिभाषा आज के समय में और अधिक प्रासंगिक है और विचारणीय भी । संत ज्ञान का प्रकाश देता है । उसे किसी राज्य की सीमा, भाषा या धर्म से नहीं बांधा जा सकता ।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्राचार्य डॉक्टर शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे ने महाराष्ट्र के संतों का इतिहास बताते हुए संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, मुक्ताबाई जनाबाई आदि के संबंध में चर्चा की । उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के संत प्रांतीय सीमाओं तक बंधे नहीं हैं। उनकी वाणी संपूर्ण समाज के लिए है। उन्होंने विश्व कल्याण का सपना देखा था जिसे पूर्ण करने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि संस्था की कार्यकारी अध्यक्ष सुवर्णा जाधव, मुंबई ने कहा कि सदियों से महाराष्ट्र धर्म भूमि रहा है। यह क्षेत्र संतों की भूमि रहा है । यहां के संतों ने कुरीतियों और रूढ़ियों पर प्रहार करके समाज में समरसता का रास्ता दिखाया है। संत तुकाराम के अभंग शृंखला बद्ध अभंग कहे जाते हैं। पंढरपुर की वारी के दौरान उनके अभंग गाए जाते हैं, जिनके माध्यम से लोक शिक्षण किया जाता है । ओस्लो, नार्वे के वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार सुरेश चंद्र शुक्ल शरद आलोक ने कहा कि विदेशों में भारतीय संस्कृति से जुड़ाव में संतों की वाणी का अविस्मरणीय योगदान है। आज भी दुनिया के अनेक भागों में बसे भारतवंशी भक्तों और संतों की रचनाओं के माध्यम से प्रेरणा ग्रहण कर रहे हैं।

कोरोना के साथ पैदा हुए नवजात ने 14 दिनों में कोरोना को मात दी

दाहोद। दाहोद में कोरोना के साथ पैदा हुए एक नवजात ने 14 दिनों में कोरोना जैसी जानलेवा बिमारी को मात दी है। 14 दिन के बच्चे ने कोरोनो का मात देते हुए स्वस्थ हुआ।

दाहोद में एक अस्पताल में कोरोना संक्रमित माता ने 21 अप्रैल को 3.। किलो वजन के स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। माता कोरोना संक्रमित होने पर बच्चे का पहले एन्टीजन टेस्ट के बाद आरटीपीसीआर टेस्ट पोजिटिव आने पर डॉक्टरों की चिंतित हो गए। वहीं दूसरी ओर माता का भी स्वास्थ्य खराब होने पर उन्हें अधिक इलाज के लिए वडोदरा ले जाया गया। कोरोना संक्रमित माता का इलाज वडोदरा में हो रहा था और नवजात बच्चे का सरकार के बालसखा योजना के तहत एन्टाइल अस्पताल में भर्ती कराया गया। एक ओर वडोदरा में माता वेन्टिलेटर पर और दाहोद में पुत्र कीभी स्थिति नाजुक। इसके बाद जो हुआ वह मेडिकल मिरेकल से अधिक था। नवजात को जब अस्पताल में भर्ती कराया गया उस समय डी-डायपर 1210, सीआरपी ।8 और ओक्सिजन लेवल ।5 से 80 था। इतने कमजोर रिपोर्ट होने के बावजूद डॉक्टरों ने बच्चे का इलाज करना शुरु कर दिया। बच्चे के जन्म के तीसरे दिन ही एन्टीबायोटिक दवाइयों के साथ मुंह में नली डालकर फिडिंग शुरू कर दिया। फिडिंग में सिर्फ दूध दिया गया। बच्चे की माता के स्वास्थ्य में सुधार देखने को मिला। वहीं दूसरी ओर वडोदरा में बच्चे की माता के स्वास्थ्य में भी सुधार देखने को मिला। पांचवे दिन बच्चे को सांस लेने की प्रक्रिया में सुधार देखने को मिला। बच्चा सामान्य तौर पर सांस लेने लगा तब छठ्ठे दिन बच्चे को चम्मस से फिडिंग शुरु किया गया। खुराक और दवाइ के साथ डॉक्टरों की लगातार निगरानी में बच्चे की स्थिति सामान्य हो गई।

रिकवरी रेट बढ़ने के बाद अस्पतालों की स्थिति में सुधार

सूरत ।

गुजरात के 'डायमंड सिटी' के रूप में पहचाने जाने वाले सूरत शहर और जिले में अभी भी कोरोना का कहर अभी भी जारी है। पिछले ३ से ४ दिनों में दैनिक मामलों में आंशिक रूप से कमी दर्ज की जा रही है । सूरत में दैनिक मामलों में दर्ज की जाने वाली कमी के बाद रिकवरी रेट में भी वृद्धि दर्ज की जा रही है। अगर आंकड़ों पर नजर डालें तो ४ मई को सूरत शहर में १,२१४ और जिले में ३६० मामले सामने आए थे । उसी दिन शहर के २,१६५ संक्रमित और जिले के ४१८ मरीजों को मिलाकर कुल २,५८३ लोग कोरोना को मात देने में कामयाब हुए हैं । जिसके बाद कुल रोगियों की संख्या १,०२,२०७ हो गई। सूरत शहर जिले में कोरोना में कुल मौत १,८२१ हो गई है। शहर जिले में सक्रिय मामलों की संख्या मंगलवार को घटकर १८,३६६ रह गई ।

सूरत शहर-जिले में कोरोना को मात देने वालों की संख्या १,०२,२०७ हो गई है। नए मामलों की संख्या में कमी और स्वस्थ होने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि के बाद रिकवर होने वाले मरीजों की संख्या एक लाख को पार कर गई है । पिछले १० दिनों में कोरोना की रिकवरी दर भी ७७ ।५ प्रतिशत से बढ़कर ८३ ।४ प्रतिशत हो गई है। अगर हम सूरत शहर के आंकड़ों को देखें तो ११ अप्रैल को वसूली दर ९२ ।३ प्रतिशत थी। जो २४ अप्रैल को घटकर ७७ ।५ फीसदी हो गई थी। बीच में स्थिति और ज्यादा खराब हो गई थी। अहमदाबाद में ४७५४ नए मामलों के साथ २३ मरीजों की मौत, सूरत में १५७४ नए मामलों के साथ १० की मौत, राजकोट में७२६ नए मामलों के साथ१४ की मौत, वडोदरा में ९४३ नए मामलों के साथ १३ की मौत, जामनगर में ७२८ नए मामलों के साथ १४ की मौत, जूनागढ़ में ३५० नए मामलों के साथ ७ मौत, गांधीनगर में ३०९ नए मामलों के साथ एक की मौत, मेहसाणा में ४५९, नवसारी में २००, खेड़ा में १९८, साबरकांठा में १९८, साबरकांठा में १९८, महिसागर में १९५, दाहोद में १६२, कच्छ में १६२ नए मामले दर्ज किए गए।

संजीव कपूर सिविल के कोरोना वारियर्स को मुफ्त भोजन देंगे

संजीव कपूर ने शहर के १२ सेफ को नियुक्तकर सिविल के डॉक्टरों के लिए तीनों टाइम के खाने की व्यवस्था की

गांधीनगर ।

कोरोना महामारी के इस दौर में कई धर्मार्थ संगठन लोगों की मदद के लिए आ रही हैं। ऐसी संस्थाए लोगों की निस्वार्थ मदद भी कर रही है। अहमदाबाद सिविल अस्पताल के बाहर कोरोना मरीजों के रिश्तेदार खुले आमसान के नीचे कई दिनों से अपनी जिंदगी गुजार रहे हैं । अस्पताल के बाहर बैठे लोगों को अक्सर लोग खाना पानी देते रहे हैं । लेकिन देश के प्रतिष्ठित सेफ संजीव कपूर ने अहमदाबाद सिविल अस्पताल के मेडिकल स्टाप को मुफ्त में भोजन देने फैसला किया है। सेफ संजीव कपूर अन्य धर्मार्थ संगठनों के सहयोग से अहमदाबाद सिविल अस्पताल में कोरोना नामित १२०० बेड अस्पताल में चौबिसों घंटे काम करने वाले डॉक्टरों के लिए अन्नपूर्णा बन गए हैं।

संजीव कपूर ने अहमदाबाद शहर के १२ सेफ को नियुक्त कर सिविल अस्पताल के डॉक्टरों के लिए तीनों टाइम के खाने की व्यवस्था की है। संजीव कपूर का दृढ़ विश्वास है कि यदि कोरोना संक्रमित मरीजों की सेवा में चौबीसों घंटे सेवा देने वाले डॉक्टरों को समय पर स्वास्थ्य और गुणवत्तापूर्ण भोजन मिलता रहेगा तो उनमें नई उर्जा का संचार होता रहेगा। उसके बाद ही ऐसे डॉक्टर उत्साह से कोरोना संक्रमित मरीजों का देखभाल कर सकेंगे । अहमदाबाद सिविल अस्पताल प्रशासन ने इस सिलसिले में जानकारी देते हुए बताया कि दो दिन पहले देश के प्रतिष्ठित शेफ संजीव कपूर द्वारा सिविल अस्पताल के डॉक्टरों को भोजन प्रदान करने के लिए एक प्रस्ताव भेजा था । इसे अस्पताल प्रशासन ने स्वीकार कर लिया है। हम संजीव की इस सेवा की सराहना करते हैं।

कक्षा 10 वीं परीक्षा रद्द करने की मांग के साथ अभिभावक मंडल की हाईकोर्ट में अर्जी

अहमदाबाद । राज्य में कोरोना का कहर लगातार जारी है। ओल गुजरात अभिभावक मंडल ने हाईकोर्ट में अर्जी दाखिल करते हुए कक्षा 10वीं की परीक्षा रद्द करने की मांग की है। अर्जी में अन्य राज्यों में भी बोर्ड की परीक्षा रद्द करने की पेशकश की है। इससे पहले भी अभिभावक मंडल ने राज्य सरकार को पत्र लिखा था किन्तु कोई निर्णय न लिए जाने पर हाईकोर्ट में अर्जी दाखिल की है।

राज्य में कोरोना के केस में लगातार वृद्धि हो रही है। राज्य सरकार ने कक्षा 1 से 9 और 11 के विद्यार्थी को मास प्रमोशन दिया गया है। जबकि कक्षा 10 व 12 की परीक्षा रद्द की गई है। आज 10वीं कक्षा की परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर ओल गुजरात अभिभावक मंडल ने हाईकोर्ट में अर्जी की है। अभिभावक मंडल के अध्यक्ष ने कहा कि गुजरात में कक्षा 10 व 12वीं कक्षा के अनुमानित 13 लाख विद्यार्थी परीक्षा देंगे। कोरोना संक्रमण के चलते देश के कई राज्यों में परीक्षा रद्द की है या सस्पेन्ड रखी है। राज्य में कोरोना की स्थिति को देखते हुए अभिभावकों ने हमारा संपर्क किया था और परीक्षा रद्द करने की चर्चा की थी ।राज्य सरकार ने इस बाबत में कोई निर्णय न लेने पर आखिरकार हमें हाईकोर्ट की शरण लेनी पड रही है।

गुजरात हाईकोर्ट में दाखिल अर्जी में पेशकश की गई है कि देश के । राज्यों में कक्षा 10 की परीक्षा रद्द की है। जिसमें हरियाणा, उत्तराखंड, पंजाब, नई दिल्ली, तमिलनाडु, जम्मू काश्मीर और महाराष्ट्र राज्य शामिल है। इसके अलावा सीबीएसई और आईसीएससी ने भी हालात को देखते हुए परीक्षा रद्द की है। गुजरात में कोरोना पर अंकुश लगाने के लिए लगातार प्रयास जारी है। अभिभावक मंडल ने अर्जी में लिखा है कि कक्षा 10वीं की परीक्षा होने पर विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावक स्कूल में आने पर भीड़ इकठ्ठा होगी। भीड़ इकठ्ठा होने पर संक्रमण फैल सकता है। राज्य में कोरोना की स्थिति को देखते हुए 10वीं की परीक्षा रद्द करने की मांग की है। सीबीएसई द्वारा विद्यार्थी के पिछले वर्ष के परफोर्मन्स के आधार पर परिणा घोषित किया जाए। 10वीं 12वीं की परीक्षा को लेकर अभी तक शिक्षा विभाग व राज्य सरकार द्वारा कोई निर्णय नहीं लिया गया है। कोरोना केस केस बढने पर सीबीएसई बोर्ड व अन्य राज्यों में कक्षा 10 के छात्रों को मास प्रमोशन दिया गया है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने बंगाल हिंसा के खिलाफ प्रदर्शन किया

राज्य सरकार की गाइडलाइन का उल्लंघन

महामारी के दौरान गुजरात सरकार एवं भारतीय जनता पार्टी का संगठन आमने सामने नजर आने लगा

अहमदाबाद ।

कोरोना महामारी के दौरान राज्य सरकार की गाइडलाइन का उल्लंघन करते हुए उनकी ही पार्टी भाजपा के कार्यकर्ताओं ने बंगाल में हिंसा के खिलाफ प्रदर्शन किया। गृह राज्य मंत्री प्रदीप सिंह जाडेजा ने राज्य में किसी भी तरह के सामाजिक सांस्कृतिक व राजनीतिक कार्यक्रम को लेकर साफ मनाही की है । महामारी के दौरान गुजरात सरकार एवं भारतीय जनता पार्टी का संगठन आमने सामने नजर आने लगा । कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते हुए राज्य सरकार ने केंद्र सरकार तथा आईसीएमआर की गाइडलाइन के मुताबिक एक दिन पहले ही राज्य में कर्फ्यू तथा अन्य दिशा निर्देशों की घोषणा की थी सरकार ने मेडिकल राशन डेरी एवं आवश्यक सेवाओं को सुबह ६:०० बजे से रात को ८:०० बजे तक खुला रखने की मंजूरी दी लेकिन प्रदेश में किसी भी तरह का सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कार्यक्रम पर रोक लगा रखी है । उधर, प्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने पश्चिम बंगाल में हुई हिंसा का विरोध करते हुए इसके खिलाफ गुजरात के हर जिला में तहसील स्तर पर विरोध प्रदर्शन का ऐलान किया जिसके बाद दक्षिण गुजरात के बारडोली में भाजपा ने विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम भी आयोजित किया ।

गृह राज्य मंत्री प्रदीप सिंह जाडेजा ने भाजपा के इस ऐलान को दरकिनार करते हुए साफ कहा है कि कोरोना महामारी के दौरान राज्य में किसी भी तरह के कार्यक्रम नहीं किए जा सकते सरकार में इन पर पूरी तरह रोक लगा रखी है । कोरोना महामारी के दौरान जब सरकार व संगठनों को मिलकर जनता की सेवा करने की जिम्मेदारी है तब भाजपा के इस विरोध प्रदर्शन से उनके ही दल की सरकार पसोपेश में आ गई है ।

साणंद के गांवो में धार्मिक आयोजन में उमड़ी भीड़

साणंद के नवापुरा गांव में भारी संख्या में महिलाएं बलियादेव मंदिर में प्रार्थना करने के लिए एकत्रित हुईं

अहमदाबाद ।

गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने कोर कमेटी की बैठक के बाद मंगलवार शाम को राज्य में कर्फ्यू की अवधि बढ़ाने के साथ आगामी दिनों के लिए एक नई मार्गदर्शिका जारी की, जिसमें सामाजिक धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर पूरी तरह रोक के निर्देश दिए गए थे । इसके बावजूद साणंद के नवापुरा में एक धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें सैकड़ों की संख्या में महिलाएं सिर पर कलश रखकर इस शोभायात्रा में शामिल हुईं। पुलिस ने करीब एक दर्जन से अधिक लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है । उधर, गृह राज्य मंत्री प्रदीप सिंह जाडेजा ने दो टूक कहा कि राज्य में किसी भी तरह का सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रम नहीं किया जा सकता। कोरोना संक्रमण को रोकने के लिए सरकार कर्फ्यू लगाने के साथ सभी तरह के सामाजिक व धार्मिक आयोजनों पर भी रोक लगाने की घोषणा की है । इसके बावजूद साणंद के नवापुरा में बलिया देव मंदिर में उमड़ी भीड़ तथा सैकड़ों की संख्या में महिलाओं की ओर से सिर पर कलश रखकर निकाली गई शोभायात्रा को लेकर सरकार प्रशासन व पुलिस की किरकिरी हुई है। स्थानीय पुलिस ने इस मामले में एक दर्जन लोगों के खिलाफ शिकायत दर्ज की है, लेकिन सवाल यह भी उठता है कि इस शोभा यात्रा को पुलिस की गाड़ी पायलटिंग करते हुए निकलवाने में मदद कर रही है । इंटरनेट मीडिया पर वायरल इस वीडियो के बाद से सरकार व प्रशासन की दोहरी नीति खुलकर सामने आ गई । इंटरनेट मीडिया पर लोग पुलिस के काम पर भी सवाल उठा रहे हैं, जहां मास्क नहीं पहनने पर पुलिस रोजाना लाखों रुपये का दंड लोगों से वसूल रही है, वही पुलिस की ही रहम नजर में सैकड़ों की संख्या में लोग एकत्र होकर धार्मिक जुलूस निकाल रहे हैं। गौरतलब है प्रदेश में कोरोना का प्रकोप थमने का नाम नहीं ले रहा है । कई जिलों में कोरोना के नित नए मामले सामने आ रहे है।

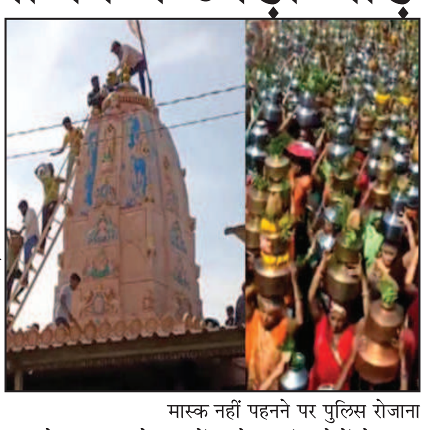

गुजरात के गांव में पेड़ पर लटके मिले दो बहनों के शव

अहमदाबाद ।

गुजरात के पंचमहाल जिले के एक गांव में दो बहनों के शव पेड़ पर लटके मिले । मंगलवार को यह दोनों बहने अपने घर से बिना बताए चली गई थी । परिजनों का आरोप है कि एक लड़की शारीरिक रूप से विकलांग थी वह खुद को पेड़ से लटका कर खुदकुशी नहीं कर सकती । पुलिस ने पंचमहाल जिले के घोघंबा तहसील के लालपुरी गांव में पेड़ पर दो युवतियों के शव लटके मिले । प्रत्यक्षदर्शियों ने इसकी सूचना पुलिस को दी पुलिस ने शवों को पेड़ से उतरवा कर उनका पोस्टमार्टम कराया व घटना की जांच शुरू कर दी है । दोनों युवतियां आपस में रिश्ते में बहन है इनके नाम सोनल राठवा १८ वर्ष तथा वर्षा राठौर १९ वर्ष बताया गया है। गत मंगलवार रात को यह दोनों अपने घर से किसी को बिना बताए चली गई थी । परिवार वालों ने पुलिस के समक्ष उनके लापता होने की शिकायत दर्ज कराई । इसके बाद अचानक उनके पेड़ से लटके हूं लेकिन सूचना मिली ।

पुलिस ने अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज कर इसकी जांच शुरू कर दी है। उधर, परिवार वालों का आरोप है कि उनकी दोनों पुत्रियों को बहला-फुसलाकर भगाया गया है अथवा अगवा किया गया उनके साथ कोई गलत हरकत होने की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता है । परिवार वालों का कहना है कि उनकी एक पुत्री शारीरिक रूप से विकलांग है जो खुद को पेड़ से लटका कर खुदकुशी करने में सक्षम नहीं है । दोनों युवतियों के शव पेड़ से लटके होने की घटना के बाद से पंचमहाल जिले में इस घटना को लेकर आम लोगों में काफी रोष व्याप्त है पुलिस को हाल इस घटना के बारे में कोई सुराग हाथ नहीं लगा है । पुलिस दो युवतियों की मौत के मामले की जांच में एफ एस एल तथा डॉग स्पॉट की भी मदद ले रही है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)